Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 42

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

17 सफर 1440 हिजरी कमरी 17 इख़ा 1397 हिजरी शमसी 17 अक्तूबर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

जब अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना को अन्धकार और गुमराही में भरा हुआ पाया और हर तरफ़ से अन्धेरा और अन्धकार की घनघोर घटा दुनिया पर छा गई। उस वक़्त इस अन्धेरे को दूर करने और ज़लालत को हिदायत और नेकी से तबदील करने के लिए एक चमकता हुआ सूर्य फ़ारान की चोटियों पर चमका अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मबऊस (प्रादुर्भव) हुए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

क़ुरआन का नाम ज़िक्र रखने की वजह

अब देखो। क़ुरआन करीम का नाम ज़िक्र रखा गया है इस लिए कि वह इन्सान की अंदरूनी शरीयत याद दिलाता है। जब इस्म फाइल(संज्ञा) को मसदर (धातु) की सूरत में लाते हैं तो वह मुबालग़ा (अतिश्योक्ति) का काम देता है जैसा ज़ैदुन अदलुन क्या अर्थ ? ज़ैद बहुत आदिल (न्याय करने वाला) है। क़ुरआन कोई नई शिक्षा नहीं लाया बल्कि इस अंदरूनी शरीयत को याद दिलाता है जो इन्सान के अंदर विभिन्न ताक़तों की आवस्था में रखी है। विनम्रता है, कुर्बानी है, बहादुरी है, ज़बरदस्ती है, ग़ज़ब है, क़िनाअत है इत्यादि। अत: जो फ़ितरत अन्दर रखी थी क़ुरआन ने उसे याद दिलाया। जैसे فِيْ كُتُبٍ مَّكْنُوْنٍ (अल-वाक़िय: :79) अर्थात सहीफ़ा फ़ितरत में कि जो छुपी हुई किताब थी और जिसको हर एक शख़्स ना देख सकता था। इसी तरह इस किताब का नाम ज़िक्र वर्णन किया ताकि वह पढ़ी जाए तो वह अंदरूनी और रुहानी कुव्वतों और इस दिल के नूर को जो आसमानी वदीअत इन्सान के अन्दर है, याद दिलाए। अत: अल्लाह तआला ने क़ुरआन को भेज कर बजाए ख़ुद एक रुहानी चमत्कार दिखाया ताकि इन्सान उन मआरिफ़ और हक़ीक़तों और रुहानी चमत्कारों को मालूम करे जिनका उसे पता ना था मगर अफ़सोस कि क़ुरआन के इस उद्देश्य को छोड़कर जो هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ(अलबक़र :3) है। इस को सिर्फ कुछ क़िस्सों का सार समझा जाता है और निहायत बेपर्वाई और ख़ुदग़रज़ी से मुशरिकीन अरब की तरह असातीरुल अव्वलीन (पहलों की कहानियां) कह कर टाला जाता है। वह ज़माना था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव का और क़ुरआन के नुज़ूल का। जब वह दुनिया से गुम हुी ताक़तों को याद दिलाने के लिए आया था। अब वह ज़माना आ गया जिसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी की थी कि लोग क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन उनके हलक़ से क़ुरआन ना उतरेगा। अत: अब तुम इन आँखों से देख रहे हो कि लोग क़ुरआन कैसी अच्छी आवाज़ और उम्दा किरत से पढ़ते हैं लेकिन वह उनके हलक़ से नीचे नहीं गुज़रता। इस लिए जैसे क़ुरआन करीम जिसका दूसरा नाम ज़िक्र है। इस आरंम्भिक ज़माना में इन्सान के अंदर छिपी हुई और भूली हुई सदाक़तों और वदीअतों को याद दिलाने के लिए आया था।

इस ज़माना में भी आसमान से एक मुअल्लिम आया

अल्लाह तआला के इस दृढ़ वादा के अनुसार से कि اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अल-हिज्र:10) इस ज़माना में भी आसमान से एक मुअल्लिम आया जो اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (सूरह अल्जुम्अ: :4) का मिस्दाक़ और मौऊद है। वह वही है जो तुम्हारे मध्य बोल रहा है। मैं फिर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी की तरफ़ लौट कर के कहता हूँ कि आपने इस ज़माना ही के बारे में ख़बर दी थी कि लोग क़ुरआन को पढ़ेंगे लेकिन वह उनके हलक़ से ना उतरेगा। अब हमारे मुख़ालिफ़, नहीं नहीं अल्लाह तआला के वादों की क़दर ना करने वाले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों पर ध्यान ना देने वाले ख़ूब गले मरोड़ मरोड़ कर يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ (आले इम्रान 56) और فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ (अलमाइदा :118) क़ुरआन में अजीब लहजा से पढ़ते हैं। लेकिन समझते नहीं और अफ़सोस तो यह है कि अगर कोई दयालु अपदेशक बन कर समझाना चाहे तो समझने की कोशिश भी नहीं करते। ना करें। इतना तो करें कि इस की बात ही ज़रा सुन लें। मगर क्यों सुनें? वे सुनने वाले कान भी रखें। सब्र और सुधारणा से भी काम लें। अगर ख़ुदा तआला फ़ज़ल के साथ ज़मीन की तरफ़ तवज्जा ना करता तो इस्लाम भी इस ज़माना में दूसरे मज़हबों के समान मुर्दा और एक क़िस्सा कहानी समझा जाता। कोई मुर्दा मज़हब किसी दूसरे को ज़िन्दगी नहीं दे सकता लेकिन इस्लाम इस वक़्त ज़िन्दगी देने को तैयार है लेकिन चूँकि यह अल्लाह की आदत है कि कोई काम ख़ुदा तआला बग़ैर कारणों के नहीं करता। हाँ यह बात अलग है कि वह कारण हम को दिखाई दें या ना लेकिन इस में कोई शंका नहीं कि कारण ज़रूर होते हैं। इसी तरह आसमान से अनवार उतरते हैं जो ज़मीन पर पहुंच कर कारण की सूरत धारण कर लेते हैं। जब अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना को अन्धकार और गुमराही में भरा हुआ पाया और हर तरफ़ से अन्धेरा और अन्धकार की घनघोर घटा दुनिया पर छा गई। उस वक़्त इस अन्धेरे को दूर करने और ज़लालत को हिदायत और नेकी से तबदील करने के लिए एक चमकता हुआ सूर्य फ़ारान की चोटियों पर चमका अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मबऊस (प्रादुर्भाव) हुए।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-11)

वाक़फ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर के साथ क्लास , फैमली मुलाकातें. मुलाकात करने वालों के ईमान वर्धक वर्णन।

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

वाक़फ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर के साथ क्लास

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार सवा सात बजे वाक़फ़ीन नौ बच्चों की क्लास शुरू हुई।

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिय जलीस अहमद ने की। इसका उर्दू अनुवाद प्रिय बिलाल अहमद सिद्दीक़ी और अंग्रेज़ी अनुवाद प्रिय ताहिर अहमद भट्टी ने पेश किया।

इसके बाद प्रिय सय्यद निवास अहमद ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निम्नलिखित हदीस पेश की।

ان المؤمن فی زمان القائم وھو بالمشرق لیری أخاہ الذی فی المغرب و کذا الذی فی المغرب یری أخاہ الذی فی المشرق

(बहारुल अनवार अलजामेअत अदर्दुर अख़बार अलआइमः अल-इज़हार लिश्शैख़ मुहम्मद बाक़िर अल-मज्लसी, जिल्द 52, बाब फ़ी सैरह वा अख़लाक़हो वा असहाबहू सफ़ा 391दार अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान)

इमाम महदी के ज़माने में मशरिक़ वाला मोमिन अपने भाई को जो मग़रिब में होगा देख लिया करेगा और इसी तरह जो मग़रिब में होगा वो अपने भाई को जो मशरिक़ में होगा देख लिया करेगा।

प्रिय उसामा सैफी ने इस आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद पेश किया।

इस के बाद प्रिय राशिद अहमद वड़ाइच ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित उद्धरण पढ़ कर सुनायाः हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तजल्लियाते इलाहिया में तहरीर फ़रमाते हैं: ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार ख़बर दी है कि वह मुझे बहुत इरादात देगा और मेरी मुहब्बत दिलों में बिठाएगा और मेरे सिलसिला को सारी ज़मीन में फैलाएगा और सब फ़िर्क़ों पर मेरे फ़िर्क़ा को ग़ालिब करेगा और मेरे फ़िर्क़ा के लोग इस क़दर इलम और मार्फ़त में कमाल प्राप्त करेंगे कि अपनी सच्चाई के नूर और अपनी दलीलों और निशानों की दृष्टि से सब का मुँह बंद कर देंगे। और प्रत्येक क़ौम इस चश्मा से पानी पीएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहां तक कि ज़मीन पर छा जाएगा। बहुत सी रोकें पैदा होंगी और इबतिला आएँगे मगर ख़ुदा सबको मध्य से उठा देगा और अपने वादा को पूरा करेगा। और ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित कर के फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँडेंगे।

अतः हे सुनने वालो! इन बातों को याद रखो। और उन पेश ख़बरियों को अपने संदूक़ों में महफ़ूज़ रख लो कि यह ख़ुदा का कलाम है जो एक दिन पूरा होगा।

(तजल्लियात इलाहिया, रुहानी ख़ज़ाइन कंप्यूटराईज़ड ऐडीशन, जिल्द 20, पृष्ठ 409,410)

इसके बाद प्रिय सौबान इक़बाल ने इस उद्धरण का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद पेश किया।

इस के बाद प्रिय सय्यद उवैस अहमद, प्रिय यासर ख़ान और प्रिय आशिर अहमद भट्टी ने MTA के विष्य से एक तराना पेश किया जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद इस्माईल मुबारक अहमद ने पेश किया।

इसके बाद प्रिय ज़रयाब फ़ारूक़ ने अंग्रेज़ी ज़बान में एम टी ए, हमारा ख़िलाफ़त से सम्बन्ध का द्वारा के विषय पर तक़रीर की। इस के बाद प्रिय लबीद अहमद ने एम टी ए की महत्व तथा बरकतों के विषय पर उर्दू भाषा में तक़रीर की।

इसके बाद प्रिय अर्सलान वलीद अहमद, प्रिय तलाल मंसूर अहमद ने एम. टी. ए हमारा ख़िलाफ़त से सम्बन्ध का माध्यम के विषय पर एक परीज़नटीशन दी।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सवाल करने की इजाज़त प्रदान फ़रमाई।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि आप में से कितने हैं जो उर्दू समझ लेते हैं ? जिन को थोड़ी बहुत उर्दू आती है या समझ लेते हैं वे बारी बारी हाथ खड़ा करें। इसी तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः वाक़फ़ीन नौ को उर्दू सीखने के लिए कोशिश करनी चाहिए।

*इसके बाद एक वाकिफ नौ बच्चे ने सवाल किया कि मैं हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह अन्हो की किताब बरकाते ख़िलाफ़त पढ़ रहा था जिस में ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो ने फ़रमाया है कि हर क़ौम में एक वक़्त आता है जब वह सियासत में जाते हैं। लेकिन इस वक़्त हमें सियासतदानों की ज़रूरत नहीं है लेकिन शायद भविष्य में हो तो उस वक़्त ख़लीफ़ा वक़्त बताएँगे। क्या अब वह वक़्त आ गया है कि अहमदी सियास्तदान बनें? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हाँ बन सकते हैं लेकिन वाक़फ़ीन नौ नहीं बन सकते। वाक़फ़ीन नौ के लिए मैंने एक प्रोग्राम दिया है कि जमाअत की क्या ज़रूरतें हैं। हमें इस वक़्त डाक्टरों और टीचरों की ज़रूरत है और कुछ इंजीनीयर्ज़ और एकाऊंटैंटस की भी ज़रूरत है लेकिन अधिकतर डाक्टरों और टीचरों की ज़रूरत है। अगर किसी में सियास्तदान बनने के लिए या इसी तरह किसी और पेशे के लिए कोई ख़ुदा तआला द्वारा सलाहीयत है तो वह व्यक्तिगत तौर पर सम्पर्क कर सकता है। वैसे तो अहमदी सियास्तदान मौजूद हैं। घाना में अहमदी सियास्तदान मैंबर आफ़ पार्लीमैंट हैं। इसी तरह पाकिस्तान में अहमदिया विरोधी क़ानून की आज्ञा से पहले 1974 ई में भुट्टो की पार्लीमैंट में तीन चार अहमदी मेम्बर थे ,एक सैनेट के मैंबर थे और दो अहमदी पंजाब असैंबली के मैंबर थे। यहां अमरीका में जो अहमदी सियासत में दिलचस्पी रखते हैं वह सियासत में जा सकते हैं लेकिन पार्टी के इंतिख़्वाब में एहतियात से काम लेना होगा।

*एक वाक़िफ़ नौ बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर कैलीफोर्निया कब तशरीफ़ लाएँगे? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जब अल्लाह लाएगा। देखें कब आएँगे। एक बार तो हो चुका हूँ।

*एक वाकिफ नौ ने सवाल किया कि आपको हीवसटन आकर कैसे लगा? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि बड़ा अच्छा है। ख़ूबसूरत नज़ारा है। हीवसटन के इर्दगिर्द सारा केती बाड़ी का इलाक़ा है, बाग़ हैं, बाड़े हैं। अच्छी जगह है।

*एक वक़्फ़ नौ बच्चे ने सवाल किया कि जमाअत अहमदिया अमरीका किस तरह कुल तौर पर अपने आपको बेहतर कर सकती है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैं अपने दौरे के अन्त में आपको बता दूँगा।

*एक बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर की अमरीका के वाक़फ़ीन नौ के लिए सबसे ज़रूरी नसीहत किया है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः आप लोग मेरे ख़ुत्बे सुनते हैं? मैंने दो साल पहले कैनेडा में ख़ुत्बा दिया था वही वाक़फ़ीन नौ का चार्टर है। इस में 31 बिन्दु थे, उन पर अनुकरण करो। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः बाक़ी एक तो तुम लोग पाँच नमाज़ें नियमित पढ़ा करो और जहां-जहां नमाज़ सैंटर और मस्जिद हैं नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ा करो, क़ुरआन करीम की तिलावत नियमित करो , अपनी दोस्तियाँ अच्छे लड़कों से रखो और पढ़ाई की तरफ़ ध्यान दो। यह चार बातें याद रख लो और बाक़ी बिन्दु इस ख़ुत्बा से ले लेना।

*एक वाकिफ नौ ने सवाल किया कि बहैसीयत वक़्फ़ नौ हमें उच्च शिक्षा की तरफ़ ध्यान दिलाया जाता है और अमरीका में छात्र की तरफ़ से लिए जाने वाला

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आप में से अक्सर जो उस वक़्त यहां मौजूद हैं,वे जो अंसारुल्लाह की उम्र के हैं वे अंसार भी हैं और मुहाजिर भी हैं। इस लिहाज़ से अपनी समीक्षा करते रहें।

नअैमान के लिए सिवाए ख़ैर के कुछ ना कहो क्योंकि वह अल्लाह और उस के रसूल से मुहब्बत रखता है। अजीब प्यार और मुहब्बत और मज़ाक़ की मज्लिसें हुआ करती थीं,यह सिर्फ़ ख़ुशक मज्लिसें नहीं होती थीं।

हज़रत नअैमान रज़ि ...की तबीयत में भी मज़ाक पाया जाता था अतः नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी बातें सुनकर आनन्दित हुआ करते थे।

हमारे साथ सिर्फ वही जंग में जाएगा जो हमारे धर्म पर है।

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबी हज़रत नअैमान बिन अमरो और हज़रत ख़ुबीब बिन इसाफ रज़ी अल्लाह अन्हुमा की मुबारक सीरत का दिलनशीं वर्णन।

मुहतरमा रशीदा बेगम साहिबा (रब्वह), मुकर्रम मुहम्मद शमशीर ख़ान साहिब (नांदी, फिजी) और मुकर्रमा फ़ातिमा मुहम्मद मुस्तफ़ा साहिबा (कुर्दिस्तान हाल नार्वे) की वफ़ात पर उनका ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जुम्अः तथा अस्र के बाद नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 सितम्बर 2019 ई. स्थान - कन्ट्री मारकेट बोर्डन, हेम्पशायर (वगे), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा के वर्णन का जो सिलसिला मैंने शुरू किया हुआ है वही आज भी वर्णन करूँगा लेकिन इस से पहले अन्सारुल्लाह को इज्तिमा के हवाले से यह भी बता दूं कि वे सहाबा जिन में अन्सार भी थे और मुहाजिर भी थे उन्होंने जब इस्लाम स्वीकार किया तो अपने अंदर पाक तब्दीलीयां पैदा कीं और ना सिर्फ क़ुर्बानियों के बल्कि तक़्वा के उच्च स्तर के और इख़लास तथा वफ़ा के अजीब नमूने दिखाए। आप में से अक्सर जो इस वक़्त यहां मौजूद हैं ,जो अन्सारुल्लाह की उम्र के हैं ,वे अन्सार भी हैं और मुहाजिर भी हैं। वे इस लिहाज़ से अपनी समीक्षा करते रहें कि हमारे सामने जो नमूने पेश किए गए थे उन पर हम किस हद तक चलने वाले और अनुकरण करने वाले हैं।

इस तमहीद के बाद अब मैं विषय शुरू करता हूँ। पहला जो वर्णन है वह हज़रत नअैमान बिन अमरो रज़ि का है जो ज़िक्र किया जाएगा। हज़रत नअैमान रज़ि का नाम नौमान भी मिलता है और नअैमान भी। और उनके पिता का नाम अमरो बिन रिफ़ाह और माता का नाम फ़ातिमा बिंत अमरो था। हज़रत नअैमान रज़ि की औलाद में मुहम्मद, आमिर, सबरह, लुबाबह, कब्शह, मर्यम और उम्मे हबीब, अमतुल्लाह और हकीमा का ज़िक्र मिलता है। इब्न इसहाक़ के निकट हज़रत नअैमान बैअत उक़बा सानिया में सत्तर अन्सार के साथ शामिल हुए थे। हज़रत नोमान जंग बदर, उहद, ख़ंदक़ और बाक़ी सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहे। एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नअैमान के लिए सिवाए ख़ैर के कुछ ना कहो क्योंकि वह अल्लाह और इस के रसूल से मुहब्बत रखता है। हज़रत नअैमान रज़ि की वफ़ात हज़रत अमीर मुआविया रज़ि के दौर हुकूमत में 60 हिज्री में हुई थी।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 257 विमन बनी ग़नमे अन्नुअमान बिन अमरो । दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई (अलकामिल फ़ित्तारीख़ भाग 3 पृष्ठ 405 ज़िक्र इद्दतिल हवादिस। सन 60 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2006 ई)

हज़रत उम्मे सलमा बयान करती हैं कि हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात से एक साल पहले बुसरा जो सीरिया का एक पुराना और मशहूर शहर है और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चाचा के साथ सारिया के तिजारती सफ़र के दौरान इसी शहर में क़ियाम किया था और इसी तरह जब हज़रत ख़दीदा रज़ि का सामान सीरिया की तरफ़ लेकर गए थे तो उस वक़्त भी इसी जगह पर क़ियाम किया था और इस सफ़र में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत ख़दीजा का ग़ुलाम हज़रत ख़दीजा भी था। बहरहाल हज़रत अबू बकर रज़ि जब वफ़ात से एक साल पहले तिजारत के लिए इस तरफ़ गए तो उनके साथ नअैमान और सोवियबित बिन हरमल: ने भी सफ़र किया और ये दोनों जंग बदर में भी मौजूद थे। हज़रत अबू बकर रज़ि के साथ इस सफ़र में नअैमान रास्ते के खाने पीने पर तैनात और इसी सफ़र की घटना है जब उनके साथी ने हज़रत नअैमान रज़ि को एक क़ौम के पास मज़ाक़ मज़ाक़ में बेच दिया था। यह घटना में हज़रत सोवियबित के वर्णन में पहले भी बयान कर चुका हूँ। बहरहाल कुछ सार रूप में वर्णन कर देता हूँ। सोवियबित उनके साथी थे उनकी तबीयत में मज़ाक था बल्कि कुछ रिवायतों से पता लगता है कि दोनों ही, हज़रत नुअमान रज़ि भी और हज़रत सोवियबित भी आपस में बड़े बे-तकल्लुफ़ थे, मज़ाक़ किया करते थे और उनकी तबीयत में मज़ाक था। तो उन्होंने सफ़र के दौरान नोमान से कहा कि मुझे खाना खिलाओ। उन्होंने जवाब दिया कि जब तक हज़रत अबू बकर रज़ि नहीं आएँगे,जो कहीं बाहर गए हुए थे , खाना नहीं दूँगा। सोवियबित रज़ि ने इस पर कहा कि अगर तुम ने मुझे खाना ना दिया तो फिर मैं ऐसी बातें करूँगा जिस पर तुम्हें ग़ुस्सा आए। रावी ने कहा कि उनका इस दौरान एक क़ौम के पास से गुज़रे तो सोवियबित ने उनसे कहा कि क्या तुम मुझ से मेरा एक ग़ुलाम ख़रीदोगे। बहरहाल कुछ समय के बाद कुछ दिनों के बाद या कुछ सफ़र में चलते चलते ही उस वक़्त यह ज़िक्र होगा। तो इस क़ौम को हज़रत सोवियबित ने कहा कि मेरे से ग़ुलाम ख़रीदोगे। क़ौम ने कहा हाँ ख़रीदेंगे तो सोवियबित ने इस पर उनको कहा कि वह बड़ा बोलने वाला है और यही कहता रहेगा कि मैं आज़ाद हूँ और जब वह तुम्हें यह बात कहे कि तुम उस को छोड़ दो तो फिर यह ना हो कि तुम मेरे ग़ुलाम को ख़राब करना। उन्होंने जवाब दिया कि नहीं बल्कि हम उसे तुझ से ख़रीदना चाहते हैं और उन्होंने उसे दस ऊंटनियों के बदले ख़रीद लिया। फिर वह लोग नअैमान के पास आए और उनके गले में पगड़ी या रस्सी डाली ताकि ग़ुलाम बना के ले जाएं। नअैमान रज़ि उनसे बोले कि यह शख़्स तुमसे मज़ाक़ कर रहा है मैं तो आज़ाद हूँ। ग़ुलाम नहीं हूँ। उन्होंने जवाब दिया कि उसने तुम्हारे बारे में पहले ही हमें बता दिया था। बहरहाल वह ज़बरदस्ती उन्हें साथ ले गए। जब हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो आए और लोगों ने इस के बारे में बताया तो फिर आप उन लोगों के पीछे गए, इस क़ौम के पीछे गए और उनको ऊंटनियां वापस दीं और नोमान

को वापस ले आए। रावी ने बताया कि जब ये लोग वापस नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आपको बताया तो रावी कहते हैं कि नबी करीम और आप के सहाबा इस से बहुत महज़ूज़ हुए। बड़ा हँसे और एक साल तक उन में यह लतीफ़ा बना रहा।(सुन्न इब्न माजा किताब आदाब बाब अल-मज़ाक हदीस 3719 मोअज्जमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 348 '' बसरा फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 58 बसरा।

कुछ जगह कुछ किताबों में इस फ़र्क़ के साथ यह घटना मिलती है कि फ़रोख़्त करने वाले हज़रत सोवियबित नहीं थे बल्कि हज़रत नौअमान थे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिल सहाब: भाग 2 पृष्ठ 354 सोवियबित बिन हरमिला दारुल फिक्र बेरूत लबनान 2003 ई)

बहरहाल दोनों के बारे में ही ये रिवायत आती है। हज़रत नअैमान रज़ि के बारे में ये रिवायत भी आती है कि उनकी तबीयत में भी मज़ाक पाया जाता था। अत: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी बातें सुनकर आन्नदित हुआ करते थे

रबीआ बिन उसमान से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक बद्दू आया और मस्जिद में दाख़िल हो कर उसने अपने ऊंट को सेहन में बिठा दिया। इस पर कुछ सहाबा ने हज़रत नुअमान रज़ि से कहा कि अगर तुम इस ऊंट को ज़िब्ह कर दो तो हम उसे खाएँगे क्योंकि हमें गोश्त खाने का बड़ा दिल कर रहा है। और बहरहाल यह बद्दू का ऊंट है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जब शिकायत होगी तो फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस का बदला अदा कर देंगे। रावी कहते हैं कि हज़रत नुअमान रज़ि ने उनकी बातों में आ कर ऊंट ज़िब्ह कर दिया और जब बद्दू बाहर निकला और अपनी सवारी को इस हालत में देखा तो शोर मचाने लगा कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम !मेरा ऊंट ज़िब्ह हो गया है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया ये किस ने किया है? लोगों ने कहा नोमान ने। यह करने के बाद नोमान वहां से चले गए। कहीं जा के छिप गए तो आप उनकी तलाश में निकले। बहरहाल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी तलाश में निकले यहां तक कि उन्हें हज़रत ज़ुबाह बिन्त ज़ुबैर बिन अब्दुल मुतलिब रज़ि के यहाँ छिपा हुआ पाया। जहां वह छिपे हुए थे वहां एक शख़्स ने अपनी उंगली से उनकी तरफ़ इशारा करते हुए ऊंची आवाज़ में कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! मुझे कहीं नज़र नहीं आ रहा। बहरहाल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे वहां से निकाला और फ़रमाया कि यह हरकत तुम ने क्यों की है? तो नोमान ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! जिन लोगों ने आप को मेरे बारे में ख़बर दी है कि मैंने यह ज़िब्ह किया, उन्होंने ही मुझे उस पर उकसाया था। उन्होंने ही मुझे कहा था और यह भी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाद में इस का बदला दे देंगे, क़ीमत अदा कर देंगे। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात सुन कर नुअमान रज़ि के चेहरे को छुआ, अपना हाथ लगाया और मुस्कुराने लगे और आप ने इस बद्दू को इस ऊंट की क़ीमत अदा दी।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिल सहाब: भाग 4 पृष्ठ 332 नअैमान बिन अमरो दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई) (अलफ़काह वल मज़ाह लेखक ज़ुबैर बिन बकार पृष्ठ 24-25 प्रकाशन 2017 ई)

ज़ुबैर बिन बकार अपनी किताब अलफक़ाह वलमिज़ाह में हमें हज़रत नुअमान रज़ि के बारे में एक घटना बयान करते हुए लिखते हैं कि

मदीना में जब भी कोई फेरी वाला दाख़िल होता , बाहर से कोई व्यापारी कोई चीज़ लेकर आता तो हज़रत नुअमान रज़ि इस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए कोई चीज़ ख़रीद लेते और वह लेकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते और यह निवेदन करते कि आप के लिए मेरी तरफ़ से तोहफ़ा है। जब इस चीज़ का मालिक हज़रत नुअमान रज़ि से इस की क़ीमत लेने के लिए आता। वहां फिर रहे होते थे। बता देते थे कि मैं वहां रहता हूँ। बाद में क़ीमत भी ले लेते थे। वाक़िफ़ होते थे। बहरहाल जब वह क़ीमत लेने आता तो वह उसे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आते और निवेदन करते कि उसे उस के माल की क़ीमत अदा कर दें। यह चीज़ जो मैंने ख़रीदी थी और आप को दी थी उस की क़ीमत अदा कर दें। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते कि क्या तुम ने ये चीज़ मुझे बतौर तोहफ़ा नहीं दी थी तो वह कहते हे रसूलुल्लाह!अल्लाह की क़सम मेरे पास इस चीज़ की अदायगी के लिए कोई रक़म नहीं थी हां मेरा शौक़ था कि अगर वह खाने की चीज़ है तो आप उसे खाएं। रखने की चीज़ है तो आप उसे रखें। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुराने लगते और इस चीज़ के मालिक को इस की क़ीमत अदा करने का आदेश फ़रमाते।

(उद्धरित लेखक अलफ़काह वल मिज़ाक लेखक ज़ुबैर बिन बकार पृष्ठ 27 प्रकाशन 2017 ई)

तो यह अजीब प्यार और मुहब्बत और मज़ाक की मज्लिसें हुआ करती थीं। यह सिर्फ़ ख़ुशक मज्लिसें नहीं होती थीं

दूसरा ज़िक्र जो आज होगा वह हज़रत ख़ुबीब बिन इसफ़ रज़ि का है। हज़रत ख़ुबीब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू जुशम से था और हज़रत ख़ुबीब रज़ि का नाम एक दूसरे कथन के अनुसार हबीब बिन यसाफ़ भी बयान हुआ है। उनके पिता का नाम इसाफ है जबकि एक दूसरे कथन के अनुसार यसाफ़ भी बयान हुआ है। इसी तरह उनके दादा का नाम इत्बा के इलावा इनबह भी बयान किया जाता है

(अस्सीरतुल नबविय्या ले इब्न हिशाम पृष्ठ 467 अल्अन्सार वमन मअहुम मन बनी जशम , दारुल कुतुब अल्इलमिया 2001 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 275 वमिन बनी जशम .... ख़ुबीब बिन यसाफ़ ,दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)(असदुल ग़ाबह भाग 1 पृष्ठ 683 हबीब बिन यसाफ़ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत ख़ुबीब रज़ि की माता का नाम सलमा बिन्त मसऊद था। उनकी औलाद में से एक बेटा अबू कसीर था जिसका नाम अब्दुल्लाह था जो जमीला बिन्त अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के गर्भ से पैदा हुआ था। दूसरे बेटे का नाम अबदुर्रहमान था जो उम्मे वल्द के गर्भ से पैदा हुआ था। एक बेटी उनेसा थी जो ज़ैनब बिन्त क़ैस के गर्भ से पैदा हुई थी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि की वफ़ात के बाद हज़रत ख़ुबीब रज़ि ने उनकी बेवा अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ि की बेवा हबीबा बिन्त ख़ारिजा से शादी की थी।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 275-276 वमन बनी जशम ... ख़ुबीब बिन यसाफ़, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिल सहाब: भाग 3 पृष्ठ 153 ख़ुबीब बिन इसाफ दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई)

हज़रत ख़ुबीब बेशक हिजरत मदीना के वक़्त मुस्लमान ना थे लेकिन फिर भी उन्हें हिजरत मदीना के वक़्त मुहाजरीन की मेज़बानी का सौभाग्य हासिल हुआ था। मुस्लमान नहीं थे लेकिन उन्होंने बड़ी मेज़बानी की, मेहमान-नवाज़ी की। हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह रज़ि और हज़रत सुहैब बिन सिनान रज़ि उनके घर ठहरे। अलबत्ता एक दूसरे कथन के अनुसार हज़रत तलहा,हज़रत असद बिन ज़ुरारह के घर ठहरे थे।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्न हिशाम पृष्ठ 338 मंज़िल तलहा व सुहैब, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

इसी तरह हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ि ने जब मदीना की तरफ़ हिजरत की तो एक रिवायत के अनुसार उन्होंने हज़रत ख़ुबीब के हाँ क़बा में सख़ के स्थान पर निवास किया था। यह सख़ एक जगह का नाम है जो मदीना के अतराफ़ ऊंचे गावों में है। जहां बनी हारिस बिन ख़ज़रज के लोग रहा करते थे उस को कहते हैं। जबकि दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ि हज़रत ख़ारिजह बिन ज़ेद रज़ि के घर ठहरे थे

(अस्सीरतुन्नबिय्या ले इब्न हिशाम पृष्ठ 348 मंज़िल अबी बक्र बक़बा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई। लुग़ातुल हदीस भाग 2 पृष्ठ 373 ''सिख़''

जंग बदर के इलावा जंग उहद, जंग ख़ंदक़ और अन्य जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ यह शामिल हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 276 व मन बनी जशम ... ख़ुबीब बिन यसाफ़ , दारा अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

एक रिवायत के अनुसार ख़ुबीब रज़ि का मदीना में पड़ाव था लेकिन इस के बावजूद उन्होंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था यहां तक कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग बदर के लिए रवाना हो गए। तब यह रास्ता में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जा मिले और इस्लाम स्वीकार किया।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तुल सहाब: भाग 3 पृष्ठ 152 ख़ुबीब बिन इसाफ दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई)

सही मुस्लिम में हज़रत ख़ुबीब रज़ि के इस्लाम स्वीकार करने का ज़िक्र यूं मिलता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी उम्मुल मोमेनीन

हज़रत आयशा रज़ि से यह रिवायत है। वह फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर की तरफ़ निकले। जब आप हर्रत्तुल बवरत: जो मदीना से तीन मील की दूरी पर एक स्थान है वहां पहुंचे तो आप को एक शख़्स मिला जिसकी जुर्रत और बहादुरी का ज़िक्र किया जाता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने जब उसे देखा तो बहुत ख़ुश हुए। जब वह आप से मिला तो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि मैं आप के साथ जाने और आप के साथ माल ग़नीमत में हिस्सा पाने के लिए आया हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया। तुम अल्लाह और इस के रसूल पर ईमान लाते हो? उसने कहा नहीं। मैं ईमान नहीं लाता। मुस्लमान नहीं हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर फ़रमाया कि वापस चले जाओ क्योंकि मैं किसी मुशरिक से मदद नहीं लूँगा। वह फ़रमाती हैं कि वह चला गया यहां तक कि फिर जब आप ई शजर पहुंचे जो ज़वालहलीफ़ा, ये मदीना से छ: सात मेल के फ़ासले पर मुक़ाम है और शजरत पहुंचे जो ज़ुल हलीफा, यह स्थान मदीना से छ: मील की दूरी पर है। और शरजह इस के निकट ही एक स्थान है। बहरहाल वहां जब पहुंचे तो वह शख़्स फिर आप को मिला और फिर वैसा ही कहा जैसा पहली बार कहा था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे वैसे ही फ़रमाया जैसे पहले फ़रमाया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लौट जाओ। मैं किसी मुशरिक से मदद नहीं लूँगा। फिर वह लौटा और आपको बेदा जो है (ज़ुलहलीफा,मदीना से छ: या सात मील की दूरी पर एक और स्थान है। शजर उस के पास ही एक मुक़ाम है और बेदा स्थान भी उधर ही है। ये दोनों जगह क़रीब क़रीब हैं बहरहाल) फिर वहां मिला तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया जैसे पहले फ़रमाया था कि मुशरिक से हम मदद नहीं लेंगे और फिर आप ने फ़रमाया कि क्या तुम अल्लाह और इस के रसूल पर ईमान लाते हो? उसने कहा जी हाँ। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया कि चलो अब तुम मेरे साथ जा सकते हो।

(सही मुस्लिम किताबुल जिहाद बाब कराहतुल इस्तेआना फ़िल ग़ज़व बेकाफ़िर ...हदीस 1817))(मुअज्जमुल बुलदान भाग 3 पृष्ठ 142 इकमालुल मुअल्लिम बफ़वाइदिल मुसलिम भाग 4 पृष्ठ 181 किताबुल हज्ज बाब अमर अहलल मदीना दारुल वफ़ा 1998 ई)

इस रिवायत की व्याख्या में ज़िक्र किया गया है कि जिस शख़्स के इस्लाम स्वीकार करने का ज़िक्र इस रिवायत में किया गया है वह हज़रत ख़ुबैब रज़ि थे।

(अलबहरुल मुहीत अलसजाज फ़ी शरह सही अल-इमाम मुस्लिम बिन अल्हजाज भाग 31 पृष्ठ 620 प्रकाशन दार इब्ने अल-जोज़ी रियाज़ 1434 हिज्री)

हज़रत ख़ुबैब बिन इसाफ़ा रज़ि के इस्लाम स्वीकार करने और जंग बदर में शिरकत का ज़िक्र करते हुए अल्लामा नूरुद्दीन हलबी अपनी किताब सीरते हलबिया में ब्यान करते हैं कि

मदीना में हबीब बिन यसाफ़ रज़ि नामक एक ताक़तवर और बहादुर शख़्स था। यह हज़रत ख़ुबीब बिन इसाफ़ रज़ि का दूसरा नाम है जो सीरत की किताबों में लिखा हुआ है। बहरहाल यह शख़्स क़बीला ख़ज़रज का था। जंग बदर तक मुस्लमान नहीं हुआ था मगर यह भी अपनी क़ौम ख़ज़रज के साथ जंग जीतने की सूरत में माल ग़नीमत मिलने की उम्मीद में जंग के लिए रवाना हुआ। मुस्लमान उस के साथ निकलने पर बहुत ख़ुश हुए मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से फ़रमाया कि हमारे साथ सिर्फ वही जंग में जाएगा जो हमारे धर्म पर है। एक और रिवायत में यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम वापस जाओ हम मुशरिक की मदद नहीं लेना चाहते। हुबीब को या ख़ुबीब को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो बार वापस लौटा दिया था। तीसरी बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से फ़रमाया क्या तू अल्लाह और इस के रसूल पर ईमान लाता है? उसने कहा हाँ और इस्लाम स्वीकार कर लिया। फिर उसने निहायत बहादुरी के साथ ज़बरदस्त जंग की।

(अस्सीरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 204 बाब ज़िक्र मुग़ाज़ी जंग बदर अल-कुबरा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

मस्नद अहमद बिन हंबल में हज़रत ख़ुबीब रज़ि अपने इस्लाम स्वीकार करने के घटना का विस्तार इस तरह ब्यान करते हैं कि

मैं और मेरी क़ौम का एक और आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में इस वक़्त हाज़िर हुए जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक जंग की तैयारी फ़र्मा रहे थे और हम ने इस वक़्त इस्लाम स्वीकार नहीं किया था। हमने निवेदन किया कि यक़ीनन हमें शर्म आती है कि हमारी क़ौम तो जंग के लिए जा रही हो और हम इस में उनके साथ शामिल ना हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या तुम दोनों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है। हमने निवेदन क्या नहीं। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यक़ीनन हम मुशरिकों के ख़िलाफ़ मुशरिकों की मदद नहीं चाहेंगे। मुशरिकों के ख़िलाफ़ जंग हो रही है तो यह किस तरह हो सकता है हम मुशरिकों से ही मदद लें। वह कहते हैं अर्थात हज़रत ख़ुबीब रज़ि कहते हैं कि इस पर हम ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इस जंग में शामिल हुए। मैंने इस जंग में एक शख़्स को क़त्ल किया और उसने भी मुझे चोट पहुंचाई। फिर उस के बाद जब मैंने इस मक़्तूल शख़्स की बेटी से शादी कर ली तो वह कहा करती थी कि तुम उस आदमी को भुला ना सकोगे जिस ने तुम्हें यह ज़ख़्म लगाया है। इस पर मैं कहता था कि तुम भी इस आदमी को भुला ना पाओगी जिसने तुम्हारे बाप को आग में पहुंचाया।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 5 पृष्ठ 411 हदीस 15855 जद्द ख़ुबीब ,आलेमुल कुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)

जंग बदर में हज़रत ख़ुबीब बिन इसाफ़ा ने क़ुरैश मक्का के सरदार उमय्या बिन ख़लफ़ को क़त्ल किया था जिसका सारांक्ष के साथ मक़्तूल के नाम का वर्णन किए बग़ैर मस्नद अहमद बिन हंबल की रिवायत में वर्णन हुआ है शादी वाली घटना जो है

इस घटना का विस्तार के साथ ज़िक्र करते हुए अल्लामा नूरुद्दीन हलबी अपनी किताब 'सीरतुल हल्बिया 'में बयान करते हैं कि हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि से रिवायत है कि मैदान बदर में मुझे उमय्या बिन ख़लफ़ मिला। वह जाहिलियत के ज़माना में मेरा दोस्त था। उम्मया के साथ उस का बेटा अली भी था जिसने अपने बाप का हाथ पकड़ा हुआ था। यह अली उन मुस्लमानों में से था जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मक्का से हिजरत से पहले इस्लाम स्वीकार कर चुके थे। इस वक़्त उनके रिश्तेदारों ने उन्हें इस्लाम से फेरने की कोशिश की जिस में वह कामयाब हो गए। इस्लाम स्वीकार किया था और फिर इस्लाम से फिर गए और फिर यह लोग कुफ़्र की हालत में मर गए। इन ही लोगों के बारे में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई है कि إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ (अन्निसा 98)निसन्देह वे लोग जिन को फ़रिश्ते इस अवस्था में वफ़ात देते हैं कि वे अपने नफ़सों पर ज़ुलम करने वाले हैं वे उनसे कहते हैं कि तुम किस हाल में रहे? वे उत्तर में कहते हैं कि हम तो वतन में बहुत कमज़ोर बना दिए गए थे। बहरहाल कहते हैं कि ऐसे लोगों में हारिस बिन रबीअह, अबू क़ैस बन फ़ाकिह, अबू क़ैस बिन वलीद, आस बिन मुनब्बह और अली बिन उमय्या थे। अल्लामा नूरुद्दीन हलबी लिखते हैं कि किताब सीरत हिशामिया में लिखा है कि इन लोगों ने जब इस्लाम स्वीकार किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में थे। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना की तरफ़ हिजरत की तो उन लोगों को उनके बाप दादों और रिश्तेदारों ने मक्का में ही रोक लिया और उन्हें आज़माईश में डाला जिसके नतीजा में ये लोग फ़ित्ने में पड़ गए और इस्लाम से फिर गए, इस्लाम छोड़ दिया। फिर वे जंग बदर के वक़्त अपनी क़ौम के साथ निकले और ये सब वहां क़त्ल हुए। इस पृष्ठभूमि से मालूम होता है कि ये लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत से पहले अपने धर्म से नहीं फिरे थे जबकि पहली रिवायत की पृष्ठभूमि से मालूम होता है कि ये लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मक्का से हिजरत करने से पहले कुफ़्र की तरफ़ लौट थे।

बहरहाल हज़रत अब्दुर्हमान रज़ि बयान करते हैं कि मेरे पास कई ज़िरहें थीं जिन्हें मैंने उठाया हुआ था। इस वक़्त जंग की घटना ब्यान कर रहे हैं कि जब उम्मया ने मुझे देखा तो मुझे मेरे जाहिलियत के नाम से हे अब्द अमरो कह कर पुकारा। मैंने उस का जवाब नहीं दिया क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मेरा नाम अब्दुर्रहमान रखा था तो फ़रमाया था कि क्या तुम इस नाम को छोड़ना पसंद करोगे जो तुम्हारे बाप दादा ने रखा था? मैंने निवेदन किया जी हाँ तो उम्मया ने कहा कि मैं तो रहमान को नहीं जानता। जब उम्मया ने मुझे मेरे नाम से पुकारा। जब दुबारा अब्दुर्रहमान कहा तो फिर मैंने जवाब दिया। बहरहाल ब-ज़ाहिर मालूम होता है कि जब उम्मया ने उन्हें उनके पुराने नाम से पुकारा था तो वह समझ तो गए थे कि इस के मुख़ातिब वही हैं मगर उन्होंने इस पुकार पर इसलिए जवाब नहीं दिया कि पुकारने वाले ने उनको एक बुत का बंदा कह कर पुकारा था और साथ ही इस बात का भी बड़ी सीमा तक संभावना है कि वह समझे ही ना हों कि किस

को पुकारा गया है क्योंकि वह नाम छोड़े हुए काफ़ी समय उनको हो गया था। फिर जब उमय्या ने उन्हें उनके मौजूदा नाम से पुकारा तो वह समझ गए कि वही मुराद हैं और वह जवाब देकर उस की तरफ़ ध्यान देने वाले हुए। तब उम्मया ने उनसे कहा कि अगर तुम पर मेरा कोई हक़ है तो मैं तुम्हारे लिए इन ज़िरहों से बेहतर हूँ जो तेरे पास हैं। पुरानी दोस्ती थी, दोस्ती का हवाला दिया। क्योंकि उस वक़्त ऐसी हालत थी कि उनको शिकस्त तो हो चुकी थी तो बचाओ की सूरत यह कहा कि यह हक़ है तो मैं बेहतर हूँ इन ज़िरहों से कि मेरे लिए तुम इंतिज़ाम करो। मैंने उन्हें कहा ठीक है। फिर मैंने ज़िरहें नीचे रखकर उमय्या और इस के बेटे अली का हाथ पकड़ लिया। उमय्या कहने लगे कि मैंने ज़िंदगी भर कभी ऐसा दिन नहीं देखा जो आज बदर के दिन गुज़रा है। फिर उसने पूछा कि तुम में वह शख़्स कौन है जिसके सीने पर ज़िरह में शुतुरमुर्ग का पर लगा हुआ है। मैंने कहा हम्ज़ा बिन अब्दुल मुतलिब रज़ि। तो उम्मया ने कहा कि यह सारा किया धरा उसी का है। उनकी वजह से हमारी यह हालत हुई है। बहरहाल उस के अपने अंदाज़े थे। एक कथन यह है कि यह बात उमय्या के बेटे ने कही थी। बहरहाल हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि कहते हैं कि इस के बाद में इन दोनों को लेकर चल रहा था। हाथ पकड़ लिया चल पड़ा कि अचानक हज़रत बिलाल रज़ि ने उमय्या को मेरे साथ देख लिया। मक्का में उमय्या हज़रत बिलाल रज़ि को इस्लाम से फेरने के लिए बड़ा अज़ाब दिया करता था। हज़रत बिलाल उमय्या को देखते ही बोले कि काफ़िरों का सरदार उमय्या बिन ख़लफ़ यहां है। अगर यह बच गया तो समझो में नहीं बचा। हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि कहते हैं कि यह सुनकर मैंने कहा तुम मेरे क़ैदीयों के बारे में ऐसा कह रहे हो? हज़रत बिलाल ने बार-बार यही कहा कि अगर यह बच गया तो मैं नहीं बचा और मैं भी हर बार ऐसा ही कहता, बार-बार उस को यही जवाब देता रहा। फिर हज़रत बिलाल रज़ि बुलंद आवाज़ से चिल्लाए कि हे अल्लाह के अन्सार! यह काफ़िरों का सरदार उमय्या बिन ख़लफ़ है। बड़ी ज़ोर से उन्होंने पुकारा कि हे अल्लाह अन्सार! यह काफ़िरों का सरदार उमय्या बिन ख़लफ़ है अगर यह बच गया तो समझो में नहीं बचा और बार-बार ऐसा कहा। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि कहते हैं कि यह सुनकर अन्सारी दौड़ पड़े और उन्होंने हमें चारों तरफ़ से घेर लिया। फिर हज़रत बिलाल रज़ि ने तलवार सौंत कर उमय्या के बेटे पर हमला किया जिसके नतीजे में वह नीचे गिर गया। उमय्या ने इस पर ख़ौफ़ की वजह से ऐसी भयानक चीख़ मारी कि ऐसी चीख़ मैं ने कभी नहीं सुनी। इस के बाद अन्सारियों ने इन दोनों को तलवारों के वार से काट डाला।

(उद्धरित अस्सीतरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 232-233 बाब ज़िक्र मुग़ाज़ी/ जंग बदर अल-कुबरा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

सही बुख़ारी में उमय्या के क़त्ल का घटना इस तरह वर्णन है कि हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ब्यान करते हैं कि मैंने उमय्या बिन ख़लफ को ख़त लिखा कि वह मक्का में, जो उस वक़्त दारुल हरब था ,मेरे माल और बाल बच्चों की हिफ़ाज़त करे और मैं इस के माल तथा सामान की मदीना में हिफ़ाज़त करूँगा। जब मैंने अपना नाम अब्दुर्रहमान रज़ि लिखा तो उमय्या ने कहा कि मैं अब्दुर्रहमान को नहीं जानता। तुम मुझे अपना वो नाम लिखो जो जाहिलियत में था। इस पर मैंने अपना नाम अब्द अमरो लिखा। जब वह बदर की जंग में था तो मैं एक पहाड़ी की तरफ़ निकल गया जब कि लोग सो रहे थे ताकि मैं इस की हिफ़ाज़त करूँ अर्थात हिफ़ाज़त की नीयत से उधर गए कि दुश्मन कहीं इधर से हमला ना करे तो बिलाल ने इस वक़्त उमय्या को वहां कहीं देख लिया। अत: वह गए और अन्सार की एक मज्लिस में खड़े हो गए और कहने लगे कि यह उमय्या बिन ख़लफ़ है। अगर बच निकला तो मेरी ख़ैर नहीं है। इस पर बिलाल के साथ कुछ लोग हमारा पीछा करने निकले। मैं डरा कि वे हमें पा लेंगे। वहां उस वक़्त तक लगता है हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि की और उमय्या की बात हो गई थी तो बहरहाल कहते हैं मुझे शक हुआ मैंने उन्हें कहा कि मैं तुम्हें क़ैदी बनाता हूँ। इसलिए मैंने उमय्या के बेटे को, दोनों को पकड़ तो लिया लेकिन जब ये मुस्लमान हमला करने वाले हज़रत बिलाल रज़ि के साथ आए तो कहते हैं मैंने उमय्या के बेटे को इस के लिए पीछे छोड़ दिया, वहां रख दिया ताकि वह हमला करने वाले उस के साथ मुकाबला करें। इस से ही लड़ाई करते रहें। इस की लड़ाई में व्यस्त हो जाएं उस के साथ और हम आगे निकल जाएं। अत: उन्होंने उसे मार डाला। उमय्या के बेटे को उन लोगों ने मार डाला। फिर यह कहते हैं कि उन्होंने हमारा पीछा किया और मेरा यह दाव कारगर ना होने दिया कि मैं उमय्या को बचा लूं। उमय्या चूँकि भारी भरकम आदमी था इसलिए जल्दी इधर उधर ना हो सका आख़िर जब उन्होंने हमें पा लिया तो मैंने उमय्या से कहा कि बैठ जाओ तो वह बैठ गया। मैंने अपने आपको इस पर डाल दिया कि उसे बचाऊं तो उन्होंने मेरे नीचे से इस के बदन में तलवारें घोंपें यहां तक कि उसे मार डाला। उन में से एक ने अपनी तलवार से मेरे पांव पर भी ज़ख़्म कर दिया। रावी इब्राहीम कहते हैं कि हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि हमें अपने पांव के पीछे वह निशान दिखाया करते थे जो इस वजह से था।

(सही अल-बुख़ारी किताब अल-वकाल बाब इज़ा वकलल मुस्लिम हरबिया फ़ी दारुल हरब औ फ़ी दारुल इस्लाम हदीस 2301)

उमय्या और इस के बेटे को किस ने क़त्ल किया ? इस बारे में मशहूर है कि उमय्या को अन्सार के क़बीला बनू माज़िन के एक शख़्स ने क़त्ल किया था जबकि इब्न हिश्शाम कहते हैं कि उमय्या को हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा, ख़ारजह बिन ज़ैद और ख़ुबीब बिन इसाफ़ ने मिलकर क़त्ल किया था। जिन सहाबी का ज़िक्र हो रहा है यह भी उनमें शामिल थे। यह भी कहा जाता है कि हज़रत बिलाल रज़ि ने उसे क़त्ल किया था परन्तु वास्तव में असल हक़ीक़त यह है कि सब सहाबा उमय्या के क़त्ल में शामिल थे और उमय्या के बेटे अली को हज़रत बिलाल रज़ि ने हमला कर के नीचे गिरा दिया था। बाद में उसे हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि ने क़त्ल किया था

(शरह अज़ज़रकानी अलल मवाहिब अल्लदुन्निया भाग 2 पृष्ठ 296 बाब ग़ज़व बदर अल्कुबरा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

कुछ घटनाओं का जो विस्तार है उनका सीधा इस सहाबी से ताल्लुक़ नहीं होता लेकिन इस में तो ज़िक्र है भी लेकिन मैं इसलिए ज़िक्र कर देता हूँ ताकि हमें तारीख़ का भी कुछ ज्ञान हो जाए।

ख़ुबीब बिन अबदुर्रहमान ब्यान करते हैं कि मेरे दादा हज़रत ख़ुबीब रज़ि को जंग बदर के दिन एक ज़ख़्म पहुंचा था जिस से उनकी पिसली टूट गई। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस जगह पर अपना मुबारक थोक लगाया और उसे उस की निर्धारित जगह पर कर के इस को सही और दरुस्त कर दिया जिसके नतीजे में हज़रत ख़ुबीब रज़ि चलने लगे।

एक दूसरी रिवायत में यह ज़िक्र है कि हज़रत ख़ुबीब रज़ि ने बयान किया कि एक जंग के अवसर पर मेरे कंधे पर एक बहुत गहरा ज़ख़्म लगा जो मेरे पेट तक पहुंच गया और इस के नतीजे में मेरा हाथ लटक गया। फिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस जगह अपना मुबारक थोक लगाया और उसे साथ जोड़ दिया जिसके नतीजे में वह बिलकुल सही हो गया और मेरा ज़ख़्म भी ठीक हो गया।

(असदुल ग़ाब: फ़ी मारफ़तुल सहाब भाग 3पृष्ठ 152 ख़ुबैब बिन इसाफ, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

(अलबदाया वन्नहाया ले इब्न कसीर भाग 3 भाग 6 पृष्ठ 166-167 सन11हिज्री दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

वफ़ात के बारे में एक कथन के अनुसार यह है कि हज़रत ख़ुबीब रज़ि की वफ़ात हज़रत उमर रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में हुई थी जबकि दूसरे कथन के अनुसार उनकी वफ़ात हज़रत उसमान रज़ि के दौरे खिलाफत में हुई थी।

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

(अल-असाबा फ़ी तमीई ज़िज़सहाबा भाग 2 पृष्ठ 224 ख़ुबैब बिन इसाफ,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 276 व मन बनी जशम ... ख़ुबैब बिन यसाफ़, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

बहरहाल अल्लाह तआला इन सहाबा के दर्जात बुलंद फ़रमाता चला जाए।

अब में तीन वफ़ात पाने वालों का भी ज़िक्र करूँगा और उनकी नमाज़ जनाज़ा भी नमाज़ों के बाद पढ़ाऊंगा।

उनमें से पहला ज़िक्र आदरणीया रशीदा बेगम साहिबा पत्नी आदरणीय सय्यद मुहम्मद सरवर साहिब रब्वह का है जो 24 अगस्त को 74 साल की उम्र में अल्लाह तआला के आदेश से वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके पूर्वज चारकोट कश्मीर से हिजरत कर के पाकिस्तान आए थे और आपके पिता अदरणीय दीन मुहम्मद साहिब रेलवे में नौकरी करते थे जो आपकी उम्र जब पाँच साल थी तो वफ़ात पा गए थे। इस के बाद उनकी आदरणीया माता ने अकेले ही बड़ी मेहनत और कठिनाई से अपने बच्चों को पाला। मरहूमा के ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके दादा आदरणीय फ़तह मुहम्मद साहिब के द्वारा हुआ था जिन्होंने कादियान जा कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत क़ाज़ी मुहम्मद अकबर साहब रज़ि के द्वारा बैअत की सआदत पाई थी। क़ाज़ी ने 1894 ई में चांद और सूरज ग्रहण का निशान देखकर अपने इलाक़ा और ख़ानदान के लोगों को बताया था कि इस निशान से पता लगा है कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम का ज़हूर हो चुका है। हज़रत क़ाज़ी मुहम्मद अकबर साहिब के साथ इस ख़ानदान के ख़ानदानी समपर्क थे और रिश्तेदारी भी थी और इस लिहाज़ से फिर उनके माध्यम से उन तक अहमदियत का पैग़ाम भी पहुंचा और बैअत भी हुई। उनके एक बेटे मुहम्मद ज़करिया साहिब लाइबेरिया में मुबल्लिग़ हैं वह कहते हैं कि मेरी माता चंदों को बड़ी बाक़ायदगी से अदा करती थीं और बड़ी फ़िक्र रहती थी और पूछती रहती थीं कि मेरा चंदा अदा हो गया है कि नहीं और फिर उस के इलावा बच्चों की तरबीयत के मामला में भी बड़ी फ़िक्र थी, बहुत ध्यान देती थीं। बच्चों को ग़ैर ज़रूरी तौर पर घर से बाहर नहीं निकलने देती थीं ताकि बच्चों को आवारगी की आदत ना पड़ जाए या बाहर जा कर कोई ख़राब आदत ना सीख लें। कहते हैं कि जब बचपन में पिता जी हम भाईयों को मस्जिद में जा कर जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने के लिए कहते और खासतौर पर जब नमाज़ फ़ज्र के लिए हमें जगाते तो माता बच्चों को मस्जिद भेजने के लिए बड़ा अहम किरदार अदा करती थीं और जब तक हम मस्जिद चले नहीं जाते थे चैन से नहीं बैठती थीं। ख़िलाफ़त के साथ बड़ी मुहब्बत, वफ़ा और प्यार का उनका सम्बन्ध था। बड़ी तवज्जा से ख़ुत्बों को सुनती थीं और इस के प्वाईंटस नोट करती थीं, बातें निकालती थीं और फिर अपने बच्चों से डिस्कस (discuss) करती थीं। फिर मरहूमा की जो बड़ी बेटी हैं उन्होंने बताया कि आख़िरी समय में भी नमाज़ की तरफ़ बड़ा ध्यान था और बड़ी लंबी नमाज़ उन्होंने पढ़ी। कोई एहसास नहीं होने दिया। नमाज़ पढ़ने के शीघ्र बाद ही उनकी तबीयत ख़राब हुई। हस्पताल ले के गए लेकिन वहां हार्ट अटैक की वजह से, दिल की हरकत बंद होने की वजह से अल्लाह तआला को प्यारी हो गईं। अल्लाह के फ़ज़ल से 1/8 हिस्सा की मूसिया थीं

उनके पाँच बेटों को बतौर वाक़फ़ीन ज़िन्दगी धर्म की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिल रही है। दो बेटे मुहम्मद मुहसिन तबस्सुम और मुहम्मद मोमिन साहिब बतौर मुअल्लिम वक़्फ़ जदीद रब्वह मैं ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। दो बेटे दाऊद ज़फ़र साहिब और ज़करिया साहिब बतौर मुरब्बी सिलसिला और एक बेटे आसिफ़ साहिब वक़्फ़ नौ हैं यह ख़िलाफ़त लाइब्रेरी में कम्पयूटर सैक्शन में हैं। मुहम्मद ज़करिया साहिब इस वक़्त लाइबेरिया में जैसा कि मैंने बताया मुबल्लिग़ हैं और माता की वफ़ात पर वह जनाज़ा पर जा नहीं सके, उन्होंने भी बड़े अच्छे सब्र का नमूना दिखाया और अपनी डयूटी जो देश के हबाहर थी उस को बाक़ायदगी से अंजाम देते रहे और कोई इज़हार इस तरह नहीं हुआ कि मैं काम नहीं कर सकता, जा भी नहीं सके। अल्लाह तआला उनके बच्चों को भी सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए खासतौर पर यह बेटे जो लाइबेरिया में मुबल्लिग़ सिलसिला हैं और वफ़ात के वक़्त अपनी माता को मिल नहीं सके और अल्लाह तआला इन सब बच्चों को उनकी माता की नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। उनकी माता के स्तर बुल्न्द फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा है मुहतरम मुहम्मद शमशीर ख़ान साहब जो नांदी फिजी के सदर जमात थे। उनकी भी 5 सितम्बर को वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। 1952 ई की उनकी पैदाइश थी और 1962 ई में अपने मरहूम पिता के साथ लाहौरी जमात से बैअत कर के जमाअत में शामिल हुए थे। पहले यह पैग़ामी थे। फिजी में पैग़ामी या लाहौरी जमाअत के बहुत से लोग हैं। बहरहाल अपने पिता के साथ उन्होंने बैअत की। 1962 ई में अहमदी हुए, ग़ैर मुबाइअ थे, बैअत कर के यह ख़िलाफ़त की बैअत में आए। इसी तरह आप जमाअत फिजी के आरंम्भिक मैम्बरों में से थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से लंबा समय जमाअत की सेवा की तौफ़ीक़ मिली। जमाअत अहमदिया मॉरो (Maru) सोवा (Suva) नांदी (Nadi) और लटूका (Lautoka) मैं मस्जिद बनाने में आपका अहम किरदार था। 2010 ई से वफ़ात तक बतौर सदर जमात नांदी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। लंबा समय नैशनल सैक्रेटरी इशाअत के तौर पर ख़िदमत करते रहे। दुनियावी लिहाज़ से भी आपको अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़ी इज़्ज़त की निगाह से देखा जाता था लेकिन जमाअत के काम हर काम पर मुक़द्दम होते थे। इलावा सदर जमाअत और नैशनल सैक्रेटरी इशाअत के आप अहमदिया मुस्लिम प्राइमरी स्कूल लटूका के मैनेजर भी थे। इंतिहाई मुख़लिस और ख़िलाफ़त के आशिक़ और इंतिहाई इताअत करने वाले इन्सान थे। पीचे रहने वालों में पत्नी राज़िया ख़ान साहिबा और एक बेटी नादिया नफीसा शामिल हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उन बच्चों को भी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

तीसरा जनाज़ा है आदरणीया फ़ातिमा मुहम्मद मुस्तफ़ा साहिबा कुर्दिस्तान हाल नार्वे का। उनकी वफ़ात 13 जून को हुई थी लेकिन कवाइफ़ थोड़े लेट पहुंचे हैं इसलिए देर से जनाज़ा पढ़ाया जा रहा है। 88 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उन्होंने 2014 ई में बैअत की तौफ़ीक़ पाई। उनके पीछे रहने वालों में तीन बेटियां और पाँच बेटे शामिल हैं जिनमें सिर्फ एक बेटी मुकर्रमा बीर यिफान मुहम्मद सईद साहिबा अहमदी हैं और इस वक़्त नार्वे में मुक़ीम हैं। यह बेटी कहती हैं कि मैं 1999 ई में नार्वे आई जहां मुझे बहुत ज़्यादा मुश्किल हालात का सामना करना पड़ा। इसलिए मेरी माता मदद करने के लिए कुर्दिस्तान से नार्वे शिफ़्ट हो गईं। माता साहिबा यद्यपि अनपढ़ थीं लेकिन उन्हें क़ुरआन करीम की बहुत सी आयतें और बहुत सी हादीसें ज़बानी याद थीं। पढ़ने लिखने का शौक़ इस क़दर कि 40 साल की उम्र से अधिक होने के बावजूद उन्होंने बहुत मेहनत कर के पढ़ना लिखना सीखा। उनकी ज़िन्दगी में सबसे अहम काम नमाज़ को इस के वक़्त पर अदा करना था। इसी तरह बहुत ज़्यादा रोज़े भी रखा करती थीं और अक्सर कहा करती थीं कि मैं इन लोगों के नाम पर रोज़े रखती हूँ जो रोज़ा रखने की ताक़त नहीं पाते। दूसरों की मदद करने का इतना शौक़ था कि इराक़ में कई बार माता साहिबा पच्चास मील का सफ़र कर के इन औरतों के साथ हस्पताल जातीं जिनका ईलाज करवाने वाला कोई ना होता था और इस के साथ-साथ उनकी आर्थिक मदद भी किया करती थीं। कहती हैं कि उनकी वफ़ात पर मुझे मुख़्तलिफ़ क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले कई लोगों के ख़त प्राप्त हुए और विशेष रूप से पाकिस्तानी अहमदी बहनों ने रोते हुए इस बात का इज़हार किया कि माता साहिबा उनसे ख़ास मुहब्बत के रिश्ते में बंधी हुई थीं। कहती हैं जब से मैं पैदा हुई माता के साथ ही रही और उनके उच्च आतरण और नेक सीरत को देखने का मौक़ा मिला। कभी किसी के बारे

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

में कोई नकारात्मक बात दिल में नहीं रखती थीं। बड़ी से बड़ी ग़लती को माफ़ करने के लिए तैयार रहती थीं। हमें बचपन से ही यह उसूल सिखाया करती थीं कि सच कहो चाहे तुम्हारे अपने ख़िलाफ़ ही क्यों ना हो। इसी तरह यह कहा करती थीं कि अगर तुम्हारी आँख या तुम्हारे हाथ ने कोई ग़लती की है तो तुम में इतनी जुर्रत तो होनी चाहिए कि अपनी आँख या हाथ को गलती करने वाला कह सको। हर किसी से मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलतीं। उनकी ज़बान हर वक़त दुआओं में डोबी रहती थी। उन्हें अल्लाह तआला और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ था और कहती हैं कि शायद यही वजह थी कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपने ज़माना के मसीह की बैअत की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई।

बेटी यह लिख रही हैं 2007 ई में मुझे अचानक एम. टी ए मिला। फिर ग़ायब हो गया। बड़ी तलाश के बाद कई साल तक नहीं मिला। एक दिन तीन साल के बाद 2010 ई में फिर एम टी ए अल-अरबी दोबारा मिल गया तो मैंने घर में शोर मचाया ,माता जी को बुलाया कि चैनल मिल गया है और फिर यही कहा कि इसी चैनल की मुझे पिछले तीन साल से तलाश थी तो माता जी को मैंने कहा कि आएं और सुनें क्योंकि ये लोग कहते हैं कि इमाम महदी और मसीह मौऊद ज़ाहिर हो चुके हैं जिसका हम इंतज़ार कर रहे थे और हमारे पिता जी भी यही बताया करते थे। कहती हैं मेरी माता ने भी मेरे साथ एम टी ए देखना शुरू किया। कुछ दिनों के बाद मेरी माता साहिबा ने मेरे बहन भाईयों को इस घटना के बारे में बताया लेकिन उनकी तरफ़ से ऐसी बातें कही गईं जिन्हें सुनकर माता साहिबा के चेहरे का रंग एकदम बदल गया लेकिन उनकी बातों की परवाह किए बग़ैर वे निरन्तर एम टी ए देखती रहीं। फिर जब वो कुर्दिस्तान गईं तो फिर कहती हैं मेरे भाईयों की बातों ने उनके दिल पर असर किया और मेरे ख़िलाफ़ हो गईं। फिर दोबारा मेरे पास आएं फिर कहती हैं मुझे भी एम टी ए देखने से रोकने लगीं। बहरहाल कहती हैं जब मैंने बैअत कर ली तो फिर हालात ख़राब हो गए और मेरी माता को उन लोगों ने कहा कि तुम्हारी बेटी काफ़िर हो गई है और कहती हैं जब मेरे भाईयों के पास जातीं तो मेरे ख़िलाफ़ हो जातीं। वापस आतीं तो फिर एम टी ए देखने लग जातीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़सीदे उन्हें बहुत पसंद थे और अक्सर उन्हें सुनकर रोने लग जाती थीं। एक रोज़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह क़सीदा कि يَاعَيْنَ فَيْضِ اللّٰهِ وَالْعِرْفَانِ गुनगुना रही थीं तो मैंने उनसे कहा कि क्या ऐसे शेअर लिखने वाले को काफ़िर कहा जा सकता है? बड़े गुस्से से उन्होंने मेरी तरफ़ देखा और बोलीं कौन ज़ालिम है जो ऐसे शख़्स को काफ़िर कहेगा तो मैंने उन्हें कहा कि आपकी औलाद भी इस में शामिल है। यह सुनकर चुप हो गईं। फिर मैंने अपनी माता को कहा कि आप अपनी क़ुव्वत ईमान की वजह से मशहूर हैं फिर आप किस से भयभीत हैं, ख़ुदा से या अपनी औलाद से? वह मेरे इस सवाल से बहुत प्रभावित हुईं लेकिन जवाब नहीं दिया। इसी रात मुझे बुलाया और कहने लगीं कि जमाअत के मर्कज़ को फ़ोन कर के कह दो कि मैंने बैअत करनी है ,तो फिर मैंने उन्हें कहा कि अभी दोबारा आप सोचें, ग़ौर करें ताकि फिर साबित-क़दम रहीं। बहरहाल कहती हैं सारी रात उन्होंने शायद ग़ौर किया ,दुआएं कीं और सुबह उठते ही कहने लगीं कि मैंने फ़ैसला कर लिया है कि मैंने बैअत करनी है। इसी तरह उन्हें जब 2016 ई में मैं गया हूँ मुझे मिलने का भी मौक़ा मिला। बड़ी ख़ुश थीं कि समय के ख़लीफा से मुलाक़ात हुई है और हर एक को बताती थीं ख़िलाफ़त से भी बड़ा वफ़ा का सम्बन्ध था।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी बेटी के भी ईमान को मज़बूत रखे और उनके बच्चों को भी और बाक़ी जो बच्चे अभी अहमदी नहीं हुए अल्लाह तआला उनके भी दिल खोले और उनकी दुआएं उनके हक़ में स्वीकार हों।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 2 अगस्त 2019 ई पृष्ठ 5-11)

☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 2 का शेष

शैक्षिक क़र्ज़ा अब 5.1टरीलीन डालर हो गया है। एक तालिब-इल्म पर शिक्षा के लिए प्राप्त किया गया क़र्ज़ा गाड़ी के कर्ज़े से और दूसरे कर्ज़ों से बढ़ जाता है ऐसे में हुज़ूर अनवर अहमदी बच्चों को क्या नसीहत फ़रमाते हैं कि वह शिक्षा के दौरान अपने माली मामलों का किस तरह बेहतर तौर पर प्रबंध करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: उच्च शिक्षा सिर्फ़ वाक़फ़ीन नौ के लिए नहीं बल्कि हर अहमदी के लिए ज़रूरी है। वाक़फ़ीन नौ को शिक्षा में सबसे आगे होना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि वे जो गर्वनमैंट या बैंक से शिक्षा के लिए क़र्ज़ा लेते हैं उनको में यही नसीहत करता हूँ कि उन्होंने जिस विभाग में शिक्षा प्राप्त की है इस विभाग में ही नौकरी तलाश करके काम करें और लगभग तीन साल के लिए तजुर्बा प्राप्त करें और अपने कर्ज़े को अदा करें। जब आप अपना पूरा क़र्ज़ा अदा कर चुकें तब आप अपने आपको वक़्फ़ के लिए पेश करें लेकिन इस दौरान मर्कज़ को अपनी प्रागरैस से सूचित रखें और इसके अतिरिक्त जैसे मैंने बयान किया है दैनिक पाँच नमाज़ों के जमाअत के स्थान पढ़ना और तिलावत क़ुरआन का एहतिमाम करें। अच्छे अख़लाक़ को प्रकट करें यह चीज़ें साथ साथ होनी चाहिऐं। यह नहीं कि अगर आप किसी हॉस्पिटल में,या कंपनी में या बहैसीयत वकील काम कर रहे हैं तो आप अपने बुनियादी कर्तव्य भूल जाएं। इसका ख़ास ख़्याल रखें। यह चीज़ें करें और अपना क़र्ज़ा अदा करें इसके बाद आगे के बारे में हिदायत ले सकते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: तीसरी दुनिया के या ग़रीब देशों के छात्र को उनकी उच्च शिक्षा के लिए हम ख़ुद भी क़र्ज़ा देते हैं।

*एक वक़्फ़ नौ बच्चे ने सवाल किया कि क्या आप पर सीधी अल्लाह तआला से वह्य होती है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला तो विभिन्न तरीक़ों से बता देता है कि क्या करना है। दिल में डाल देता है, कोई सीधी वह्य नहीं होती। वह्य सिर्फ़ नबियों को होती है।

वाक़फ़ीन नौ की यह क्लास 8 बजकर 15 मिनट पर ख़त्म हुई। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने इस क्लास में शामिल होने वाले सारी बच्चों को जाए नमाज़ प्रदान फ़रमाए। इस के बाद सारी बच्चों ने हुज़ूर अनवर के साथ एक ग्रुप तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

इस के बाद एक वाक़िफ़ नौ नौजवान प्रिय सय्यद निवास अहमद ने अज़ान दी। हुज़ूर अनवर इस दौरान महिराब में खड़े रहे। अज़ान के बाद हुज़ूर अनवर ने इस ख़ादिम को अपने पास बुलाया और पूछा कि क्या कर रहे हैं? इस पर नौजवान ने निवेदन किया कि डाक्टर हूँ और रीज़ीडीनसी कर रहा हूँ। हुज़ूर अनवर ने Loan के बारे में पूछा कि कितना क़र्ज़ (LOAN) है और कब तक अदा हो जाएगा। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि कुछ ऐसे तरीक़ भी हैं कि सेवा के काम करें, समाज सेवा का काम करें तो क़र्ज़ एडजस्ट हो जाता है और कुछ अवस्थाओं में कम भी हो जाता है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तो फिर घाना चले जाओ।

इस के बाद सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

27 अक्तूबर2018 ई (दिनांक हफ़्ता)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे मस्जिद बैतुलसमीअ में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़जर पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्से में तशरीफ़ ले गए।

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए और वहां जमाअत हीवसटन की निम्नलिखित मज्लिसे आमिला के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने का सौभाग्य पाया।

*लोकल मजलिस आमला जमाअत अहमदिया हीवसटन साऊथ * मजलिस आमला जमाअत हीवसटन नॉर्थ * मजलिस आमला जमाअत हीवसटन साइप्रस * हीवसटन जमाअत के इन रज़ाकार काम करने वाले का ग्रुप जो विभिन्न विभागों में ख़िदमतें कर रहे थे।

तस्वीरों के प्रोग्राम के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

फ़ैमिली मुलाक़ात

आज सुबह के इस सैशन में 74 फ़ैमिलीज़ के 396 लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी लोगों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीरों बनवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं।

आज मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ अमरीका की विभिन्न 28 जमाअतों से आई थीं। सेंट पाओल, जॉर्जिया, कैरोलीना,फोनिक्स, ऐरीज़ोना,कांसास सिटी, लास वेगस, मियामी, औयरलीनडो, पोर्ट लैंड, सैटल, ज़ी आन। इन जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ और लोगों बड़े लम्बा सफ़र तय करके हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे। कुछ लोगों और फ़ैमिलीज़ 1182 मील का लम्बा सफ़र साढ़े सतरह घंटे में तय करके मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे।

मुलाक़ात करने वाले लोगों के ईमान वर्धक विचार

देश गेम्बिया से सम्बन्ध रखने वाले एक दोस्त एबोजफ़ो साहिब जो आजकल अमरीका में Minnesota मैं रहते हैं, अपनी मुलाक़ात का हाल बयान करते हुए बताते हैं कि यह मेरी ज़िन्दगी की पहली मुलाक़ात थी। मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं इस को वर्णन कर सकूं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मेरी आवाज़ बंद नहीं हुई और में अपने प्यारे इमाम से बात कर सका। मैंने हुज़ूर अनवर के गिर्द एक ख़ास रोशनी देखी है। मैंने हुज़ूर अनवर से निवेदन किया की कि मेरा इंशोरंस का बिज़नस है, इस के लिए कोई नाम तजवीज़ फ़र्मा दें। हुज़ूर ने दया करते हुए मेरे बिज़नस का नाम मेरे ही नाम पर तजवीज़ फ़रमाया।

एक दोस्त मुसव्विर राना साहिब जो जमाअत सान आनटोनटियो से आए थे, बयान करते हैं कि ख़लीफ़ा वक़्त से पहली बार मुलाक़ात एक ऐसा बात है जिसको कोई शख़्स शब्द में ढाल नहीं सकता। एक अजीब सा सुकून महसूस कर रहा हूँ।

शुऐब अहसन साहिब जो ऑस्टन (Austin) जमाअत से मुलाक़ात के लिए आए थे। कहते हैं कि हुज़ूर का दफ़्तर इलाही नूर से भरा हुआ था जिसे हर आँख देख सकती है। मेरी पत्नी बहुत घबराई हुई थीं। हुज़ूर अनवर ने उनको तसल्ली दी और फ़रमाया घबराने की कोई ज़रूरत नहीं। फिर मैंने निवेदन किया कि हमारा बेटा वक़्फ़ नौ है और हमारी यह इच्छा है कि वह बड़ा हो कर एक कामयाब मुबल्लिग़ और वाक़िफ़ ज़िन्दगी बने। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दया करते हुए हमारे बेटे से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया कि जब तुम ग्यारवीं जमाअत में पहुँचो और तुम्हारा अपना दिल करे मुरब्बी बनने का तो ज़रूर बनो। अपने माता पिता के दबाव में नहीं आना बल्कि ख़ुद फ़ैसला करना है कि तुम ने क्या बनना है। अगर डाक्टर बनना चाहो तो वह बन जाओ। यह तुम्हारी अपनी पसन्द है।

सबा रऊफ़ साहिबा अपनी फ़ैमिली की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की बातें वर्णन करते हुए कहती हैं कि हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल होते ही जब मेरी नज़र हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर पड़ी तब से लेकर अब तक मेरे वजूद पर एक रिक़्क़त तारी है। मैं हुज़ूर अनवर से कुछ ना कह सकी। हुज़ूर अनवर ने पहले अपना दया का हाथ मेरे बच्चों के सिर पर रखा। फिर मुझे बुला कर एक निहायत ही शफ़ीक़ बाप की तरह मेरे सिर पर भी अपना मुबारक हाथ रखा। मैं इस मंज़र को बयान नहीं कर पा रही। आँखों के सामने वह मंज़र आ जाता है तो रो पड़ती हूँ। ऐसा महसूस होता है जैसे हुज़ूर अनवर से मिलकर वक़्त रुक सा गया है और जैसे आज एक नई रूह ख़ुदा तआला ने हमारे अंदर फूंक दी है। अपने आक़ा के दर्शन की बरसों से जो तिश्नगी थी वह आज दूर हुई।

महोदया की पंद्रह साला बेटी नूरुल अरफ़ान रब्बानी कहती हैं कि मैं जैसे ही हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुई और हुज़ूर अनवर के नूरानी चेहरा पर नज़र पड़ी उस वक़्त से लेकर बाहर आने तक निरन्तर मेरी आँखों से आँसू जारी थे। हुज़ूर अनवर ने दया और प्यार से मेरे भाई और बहन के सर पर हाथ फेरा और हम तीनों को क़लम और चॉकलेट भी प्रदान फ़रमाए।

डानील ब्रूक साहिब जिनका सम्बन्ध जमाअत ऑस्टन (Austin) से है। कहने लगे आज ज़िन्दगी में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मेरी पहली मुलाक़ात थी। ख़ाकसार ने ग्यारह साल पहले अहमदियत क़बूल की थी। आज का दिन मेरी ज़िन्दगी का अहम दिन था। मेरी ख़ुशी की सीमा थी। मैं चूँकि अब रिटायर हो चुका हूँ अत: हुज़ूर ने मुझे इरशाद फ़रमाया कि उर्दू और अरबी ज़बान सीखने के साथ साथ अपनी रूहानियत की तरफ़ ख़ास ध्यान करूँ।

एक दोस्त औसाफ़ मलिक साहिब बयान करते हैं कि हम मुलाक़ात से पहले बहुत ज़्यादा घबराए हुए थे लेकिन जैसे ही मुलाक़ात के लिए हुज़ूर अनवर की सेवा में हाज़िर हुए सब घबराहट अपने आप दूर हो गई। मेरी बेटी के हाथ अब भी काँप रहे हैं लेकिन यह इसलिए नहीं काँप रहे कि कोई ख़ौफ़ है या डर है बल्कि ख़ुशी की सीमा की वजह से ऐसा हो रहा है।

एक साहिब महमूद असलम क़मर साहिब Bay Point (कैलीफोर्निया) से मुलाक़ात के लिए आए थे। वह कहने लगे, मैं चार साल पहले अपनी फ़ैमिली के साथ अमरीका हिजरत करके आया हूँ और आज हम कितनी ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमारी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हुई। हम ने जब हुज़ूर अनवर को क़रीब से देखा तो एक ऐसा दिलकश मंज़र था कि यूं मालूम होता था कि जैसे ख़ुदा के फ़रिश्तों ने ख़लीफ़ा वक़्त को घेरा हुआ है।

हुस्न ताहिर साहिब बयान करते हैं कि ख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात के यह कुछ लम्हे नि:स्सन्देह मेरी ज़िन्दगी का ख़ुलासा और सबसे बेहतरीन लमहे हैं।

ख़ुर्रम शहज़ाद साहिब जो Utah स्टेट से आए थे। मुलाक़ात के बाद कहने लगे। हमने हुज़ूर अनवर को TV पर ही देखा है। आज जब अपनी आँखों से अपने सामने देखा तो ऐसे लग रहा था कि जैसे कोई ख़्वाब है जो हम देख रहे हैं। अब भी यक़ीन नहीं आ रहा है कि हुज़ूर अनवर से मिलकर आए हैं। मैंने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि हम रब्वह से आए हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह का शुक्र है कि आप ख़ैरीयत से यहां पहुंच गए हैं। लेकिन अब हर मुम्किन कोशिश करनी है कि Active हो कर जमाअत के साथ सम्पर्क में रहना है।

मुलाक़ात करने वाले एक दोस्त मिर्ज़ा मुहम्मद आरिफ़ साहिब बयान करते हैं कि हमारी हुज़ूर अनवर से यह पहली मुलाक़ात थी। यद्यपि मुलाक़ात संक्षिप्त थी लेकिन यूं लगता है जैसे हम एक ख़ज़ाना समेट कर साथ लाए हैं। मेरा बेटा अभी बोलता नहीं है। इस के बारे मैंने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ के लिए निवेदन किया तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मुहब्बत और दया से इस बेटे के साथ बात करते रहीं। अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़र्मा देगा। इंशाअल्लाह।

साऊथ पैसिफिक के द्वीप देश मार्शल आई लौंडज़ से बहुत से अहमदी लोगों हिजरत करके अमरीका के सूबा Arkansas में आकर आबाद हुए हैं। आज यहां से अठारह लोगों पर आधारित वफ़द 918 किलोमीटर का लम्बा सफ़र द्वारा सड़क बारे घंटे में तय करके हीवसटन पहुंचा था। इन ख़ुश-नसीब लोगों ने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार ख़लीफ़तुल मसीह का दर्शन किया। उन्होंने हुज़ूर अनवर के अनुकरण में नमाज़ें अदा कीं और नमाज़ जुम्अ: भी अदा करने की तौफ़ीक़ पाई। यह लोग बुध की रात हीवसटन पहुंचे थे। आज उनकी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात भी हुई। उनके क्षेत्र के मुबल्लिग़ बताते हैं जब हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब आ रहा था। उनके चेहरे ख़ुशी से चमक उठे थे। मारशलीज़ क़ौम के यह लोग भी आज अपनी ज़िन्दगियों में पहली बार हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्रोत से तृप्त हो रहे थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इन सब का हाल पूछा, उनसे गुफ़्तगु फ़रमाई और उनसे हिजरत के बारे में पूछा। इन सभी लोगों ने अपने आक़ा के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य भी पाया।

मुलाक़ात के बाद एक औरत Lin Amlek साहिबा कहने लगीं कि मुलाक़ात के दौरान मेरे लिए अपनी भावनाओं पर क़ाबू पाना मुश्किल था। एक दूसरी औरत Arlynn Mission साहिबा ने निवेदन किया कि मुलाक़ात के दौरान मेरे आँसू जारी थे।

एक दोस्त Renny Luther साहिब कहने लगे कि आज ख़लीफतुल मसीह से मुलाक़ात मेरी ज़िन्दगी के निहायत ख़ूबसूरत लम्हे थे। एक साहिब Anton Marquez साहिब ने बताया कि मैं तो अपनी जगह पर साकित हो गया और

हुज़ूर अनवर के चेहरे को देखता रहा और कुछ भी कह ना पाया।

आज की इस मुलाक़ात ने उन लोगों के ख़िलाफ़त के साथ सम्बन्ध को बहुत मज़बूत किया है। यह लम्हे उनको हमेशा याद रहेंगे। इन लोगों में जो एक नया जोश और वलवला पैदा हुआ है अब इस द्वारा से इंशा अल्लाह मारशली कम्यूनिटी में तब्लीग़ के और अधिक रास्ते खुलेंगे। इन लोगों ने तीन से चार दिन यहां निवास किया। यह लोग भी दूसरे अहमदियों की तरह उन राहों पर खड़े हो जाते जहां से हुज़ूर अनवर ने मस्जिद या अपने दफ़्तर आते और जाते हुए गुज़रना होता।

एक नौ अहमदी औरत Arlynn ने अपने मुबल्लिग़ को बताया कि मैं भी रास्ता में हुज़ूर अनवर के दर्शन के लिए खड़ी थी। जब हुज़ूर को अपने सामने से गुज़रते हुए देखा तो मेरे जिस्म पर सकता छा गया और यूं महसूस होता था कि मेरे क़दम रुक गए हैं और मैं चलना भूल गई हूँ। मेरे अंदर की अजीब अवस्था थी। एक ख़ास एहसास था। जो मैं अपने अंदर महसूस कर रही थी।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम तीन बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुल समीअ में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

जमाअत हीवसटन ने अपने इस सैंटर और कम्पलैक्स में एक ख़ूबसूरत बाग़ भी लगाया हुआ है जहां विभिन्न किस्मों के फलदार वृक्ष भी हैं और फूलों के पौधे भी हैं।

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और बाग़ में तशरीफ़ ले गए और वहां एक पौधा लगाया।

हुज़ूर अनवर ने सेक्रेटरी खेती परवेज़ हसन बाजवा साहिब से पूछा कि इस बाग़ में कौन कौन से फलदार पौधे हैं। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि माल्टे के दरख़्त हैं, छोटे साइज़ के औरैंज के दरख़्त भी हैं, नाशपाती भी है, जापानी फल भी लगा हुआ है, गन्ना भी लगाया गया है। इस के अतिरिक्त नारीयल, पाम ट्री और खजूर के दरख़्त भी लगे हुए हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इंजीर भी लगाऐं। इसी तरह फ़रमाया पूना गन्ना क्यों नहीं लगाते, वह भी लगाऐं।

हुज़ूर अनवर ने सेक्रेटरी खेती से पूछने फ़रमाया कि बीज इत्यादि कहाँ उगाते हैं। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि बीज इत्यादि अपने घर में उगाता हूँ। इस के बाद पौधा यहां लगाता हूँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अभी जो पौधा मैंने लगाया है यह कौन सा पौधा है? इस पर महोदय ने निवेदन किया कि यह एक फूल का पौधा है जो एक दरख़्त बनता है और इस पर बड़े साइज़ के फूल लगते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया फलदार पौधा लगाना चाहिए था।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला कुछ देर के लिए आदरणीय नासिर हफ़ीज़ मलिक साहिब की दरख़ास्त पर उनके घर तशरीफ़ ले गए। अगस्त 2017 ई में हीवसटन में एक Hurricane (समुंद्री तूफ़ान) आया था जिसकी वजह से उनके घर के अंदर काफ़ी पानी आ गया था और यह लगभग आठ माह किसी दूसरी जगह मुक़ीम रहे। हुज़ूर अनवर ने उनसे पूछा कि घर इतना ऊंचा है फिर भी पानी अंदर आ गया। इस पर महोदय ने कहा कि बहुत बड़ा तूफ़ान था। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए उनका घर देखा और घर के पिछले हिस्सा में बाग़ भी देखा जिसमें अनार, लोकाट,आड़ू, मालटा, गरे फ़रुट और लीमूँ के फलदार पौधे लगाए हुए हैं। लगभग आधा घंटा रहने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला पाँच बजकर चालीस मिनट पर यहां से वापस आने के लिए रवाना हुए और छ: बजे हुज़ूर अनवर की मस्जिद बैतुल-समीअ लाए। हुज़ूर अनवर अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

फ़ैमिली मुलाक़ात

आज शाम के इस सैशन में 52 फ़ैमिलीज़ के 236 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ ग्यारह विभिन्न जमाअतों से आई थीं। कुछ लोगों और फ़ैमिलीज़ बड़ा लंबा सफ़र तय करके पहुंची थीं। सबसे लंबा सफ़र करने वाले ग्यारह सौ मील का सफ़र पंद्रह घंटों में तय करके पहुंचे थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को दया करते हुए चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। इन सभी लोगों और फ़ैमिलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया।

मुलाक़ात करने वाले लोगों के विचार

मुलाक़ात करने वाले एक दोस्त राना क़मर मुबारक साहिब बयान करते हैं कि हुज़ूर अनवर के साथ हमारी ज़िन्दगी में पहली मुलाक़ात थी। हम छ: साल पहले पाकिस्तान से आए थे। रियासत Texas की सरज़मीन बहुत ख़ुशनसीब है जिस पर अल्लाह के ख़लीफ़ा के मुबारक क़दम पड़े हैं। अहमदियत की बढ़ती हुई तरक़्क़ी को देखकर में यह कह सकता हूँ कि इंशाअल्लाह एक वक़्त ऐसा भी होगा कि जब लोग कहेंगे कि हम अमुक शख़्स को जानते हैं जो ख़लीफ़ा वक़्त से मिला हुआ है। अब तक MTA के द्वारा या फिर अलफ़ज़ल में छपने वाली रिपोर्टस में पढ़ते थे कि ख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात करके लोग कैसा महसूस करते हैं। आज अल्लाह तआला ने हमें इस नेअमत से हिस्सा प्रदान फ़रमाया है। हुज़ूर अनवर से मिलकर ऐसा अनुभव मिलता है जैसे हुज़ूर हम सबको जाने कब से जानते हैं। बहुत प्यार से मिलते हैं और सब परेशानियाँ दूर हो जाती हैं और दिल सन्तोष से भर जाता है।

एक दोस्त अज़हर बिलाल जट साहिब बयान करते हैं कि पाँच साल पहले अमरीका आए थे। यह हमारी पहली मुलाक़ात थी। मुझे अब भी ऐसा लग रहा है जैसे मैं आसमानों में उड़ रहा हूँ। हुज़ूर अनवर से मिलकर एक अजीब सुकून दिल पर नाज़िल होता है। अल्लाह तआला यह नेअमत और यह दिन हमारे दूसरे अहमदी भाईयों को भी नसीब फ़रमाए।

उनकी पत्नी कहती हैं कि हम तो आते जाते हुज़ूर अनवर को देखने के लिए क़तार में खड़े रहते थे ताकि अपने आक़ा की एक झलक नसीब हो जाएगी। हुज़ूर अनवर को TV पर तो कई बार देखा है लेकिन अपने सामने देखा तो हुज़ूर अनवर के चेहरा पर इतना ज़्यादा नूर पाया कि हमारी आँखें अपने आप सम्मान में झुक गईं।

अताउल हादी साहिब जो एक अफ्रीकन अमरीकन नौ अहमदी दोस्त हैं और St. Louis शहर से सम्बन्ध रखते हैं, वह बयान करते हैं कि मैंने कुछ साल पहले बैअत की थी और फिर मेरे बाद मेरी पत्नी ने भी बैअत का शरफ़ प्राप्त किया। मेरी पत्नी की हुज़ूर अनवर से यह पहली मुलाक़ात थी। वह बहुत घबरा रही थी लेकिन जब मुलाक़ात के लिए हम हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुए तो इस की सारी घबराहट एक अजीब से सुकून में बदल गई। मुझे यूं मालूम होता था जैसे एक नूर की रौशनी है जो हुज़ूर अनवर के वजूद से निकल कर इस में दाख़िल हो रही है। मैं तो ख़ुद यह महसूस कर रहा था जैसे एक परवाना रोशनी के सामने महसूस करता है। आज इस ख़ुदाई नूर का एक शोला में अपने साथ सेंट लूइस लेकर जा रहा हूँ और उम्मीद है कि इस से वहां के दूसरे लोगों भी लाभान्वित हो सकेंगे।

एक दोस्त ज़ाबिर अहमद साहिब जो अटलांटा से 12 घंटे से अधिक का सफ़र तय करके मुलाक़ात के लिए आए थे, बयान करते हैं कि हुज़ूर अनवर का नूरानी चेहरा देखकर इन्सान ख़ुद बख़ुद रो पड़ता है और अपने भावनाओं पर क़ाबू नहीं रख सकता। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए गला मिलने की इच्छा भी पूरी फ़र्मा दी। अल्हम्दुलिल्ला

2008 ई में बैअत करने वाले एक दोस्त Michael Banks साहिब की अपनी पत्नी के साथ ख़लीफ़ा वक़्त से पहली मुलाक़ात थी। वह कहते हैं कि मुलाक़ात से पहले हम दोनों ही बहुत घबराए हुए थे। मुलाक़ात शुरू हुई तो मैं बोल नहीं पा रहा था। हुज़ूर अनवर की रुहानी व्यक्तित्व बहुत प्रभावित करने वाला है। मैंने हुज़ूर अनवर से ज़िक्र किया कि मुझ में बहुत ख़ामियाँ हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि कोई परफ़ेक्ट नहीं होता लेकिन इन्सान को दिन प्रतिदिन कोशिश करके ख़ुद को बेहतर बनाना पड़ता है। वह कहते हैं कि अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है कि इस ने मुझे अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ प्रदान की और तौफ़ीक़ दी कि में भी ख़िलाफ़त की नेअमत उज़्मा से लाभान्वित हो सकूं।

एक दोस्त ख़ालिद इशफ़ाक़ साहिब जो छ: महीने पहले पाकिस्तान से हिजरत करके आए थे कुछ साल पहले लाहौर में अल-फ़ज़ल अख़बार अहमदी घरानों में Deliver करते हुए गिरफ़्तार हो गए और छ: महीने कैद में गुज़ारे। हुज़ूर अनवर से अपनी ज़िन्दगी की पहली मुलाक़ात का ज़िक्र करते हुए बयान करते हैं कि हुज़ूर से मुलाक़ात मेरी ज़िन्दगी का सबसे बेहतरीन लम्हा है। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए मुझे गले लगाया और तबर्रुक के रूप में एक अँगूठी भी प्रदान फ़रमाई।

एक दोस्त देश रिज़वान अहमद साहिब जो थाईलैंड में क़ैद रह चुके हैं, उनकी भी हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात थी। बयान करते हैं कि जब हम पाकिस्तान में थे तो नहीं जानते थे कि कभी ख़लीफ़ा वक़्त का दर्शन और क़ुरब हमें भी नसीब होगा, आज अल्लाह तआला ने हमारी पंद्रह साल की इच्छा पूरी कर दी है।

उनकी पत्नी बताने लगीं कि मुलाक़ात का आवस्था बयान करना मुश्किल है। जिस तरह सूरज की तरफ़ इन्सान देखने की कोशिश भी करे तो देख नहीं पाता। ठीक वैसे ही जब हम हुज़ूर अनवर के नूर वाले चेहरा मुबारक की तरफ़ देखते हैं तो आँखें हुज़ूर अनवर के चेहरा पर टिकती नहीं। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए मेरे बेटे को क़लम भी प्रदान फ़रमाया।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम आठ बजकर पैंतालीस मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मस्जिद में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब का आयोजन हुआ।

आमीन के प्रोग्राम की तकरीब

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 31 बच्चों और बच्चियों से एक-एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिया फ़ातिह अहमद नून, ताहिर लईक, तमसील देश, सय्यद ईक़ान अहमद, ज़ोहैब अहमद, साक़िब महमूद ख़ान, अयान अहमद अय्याज़, ज़ईम वहीद, मआज़ राशिद किरन, दानिश प्रिय भट्टी, अयान अहमद नसीर।

प्रिया महरविश रहीम, महर रहीम, अयान देश, अर्हम फ़ारूक़, हुदा ख़ान, समीहा तारिक़, हिबतुल हई मिशकात, Rodiyallah Oresanya, युसरा बुशरा शेख़, सय्यदा सुबीका कामरान, ज़ोहा पाल, अज़्का मुबश्शिर, आईशा नवेद, Mantara Rehan Mooda, ज़ैनब मर्यम मलिक, आसिफ़ा मुर्तज़ा देश, ख़दीजा ख़ान, सायरा बुशरा भट्टी, आसिफ़ा बुशरा ख़ान, मारिया हुसना कौसर।

आमीन के प्रोग्राम की तकरीब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दया करते हुए लजना के हाल और उनकी मार्की मैं तशरीफ़ ले गए। औरतों ने हुज़ूर अनवर की अचानक आने पर ख़ुशी तथा आन्नद से नारे बुलंद किए और शरफ़ ज़यारत से फ़ैज़याब हुईं। आज हीवसटन में निवास का आख़री दिन था।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

28 अक्तूबर2018 ई (दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे मस्जिद बैतुलसमीअ में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाईं और हिदायतों से नवाज़ा। आज प्रोग्राम के अनुसार हीवसटन से वाशिंगटन के लिए रवानगी थी।

हीवसटन से वाशिंगटन के लिए रवानगी

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 10 बजकर 45 मिनट पर अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। रवानगी से पहले काम करने वाले के निम्नलिखित विभिन्न ग्रुपों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरों बनवाने का सौभाग्य पाया।

सैक्योरिटी ग्रुप, ज़यायफ़त के काम करने वाले की टीम, ट्रांसपोर्ट विभाग के काम करने वाले, इस अवसर पर Sheriff पुलिस के डयूटी देने वाले लोगों ने भी ग्रुप फ़ोटो बनाने का सौभाग्य पाया।

जमाअत के लोगों मर्दों तथा औरत की एक बहुत बड़ी संख्या अपने प्यारे आक़ा को विदा कहने के लिए सुबह से ही मस्जिद बैतुलसमीअ के बाहरी सेहन में जमा थी। बच्चे और बच्चियां विदाई दुआइया नज़्में पढ़ रहे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सब को अस्सलामो अलैकुम कहा और सामूहिक दुआ करवाई और इसके बाद हीवसटन इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए रवानगी हुई।

हुज़ूर अनवर की आने से पहले बोर्डिंग कार्ड के हुसूल और सामान की बुकिंग की कार्रवाई पूर्ण हो चुकी थी।

ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की एयरपोर्ट पर लाए। यूनाईटिड एयर लाईन के सीनीयर स्टाफ़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को ख़ुश आमदीद कहा और हुज़ूर अनवर एक विशेष प्रोटोकोल प्रबंध के अन्तर्गत स्पेशल लाओनज में तशरीफ़ ले आए।

ग्यारह बजकर पच्चास मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जहाज़ पर सवार हुए और बारह बजे यूनाईटिड एयर लाईन की परवाज़ UA-1192 हीवसटन के जॉर्ज बुश एंटर कांटीनेंटल एयरपोर्ट से वाशिंगटन के Dulles एयरपोर्ट के लिए रवाना हुई। लगभग दो घंटे पच्चास मिनट के सफ़र के बाद वाशिंगटन के स्थानीय वक़्त के अनुसार तीन बज कर पच्चास मिनट पर जहाज़ वाशिंगटन के Dulles एयरपोर्ट पर उतरा। वाशिंगटन का वक़्त हीवसटन के वक़्त से एक घंटा आगे है।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जहाज़ से बाहर तशरीफ़ लाए तो आदरणीय डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब नायब अमीर यू एस ए ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश आमदीद कहा।

एक विशेष प्रोटोकोल प्रबंध के अन्तर्गत हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ एयरपोर्ट से बाहर तशरीफ़ लाए और मस्जिद बैयतुर्रहमान के लिए रवानगी हुई। लगभग पच्चास मिनट के सफ़र के बाद पाँच बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मस्जिद बैयतुर्रहमान लाए।

हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए वाशिंगटन की स्थानीय जमाअतों के अतिरिक्त कुछ दूर की जमाअतों से आने वाले लोगों मर्दो औरत बड़ी संख्या में हुज़ूर अनवर की आने की प्रतीक्षा कर थे। डेट्रॉइट, लास अंजलीज़, शिकागो, मिलवाकी, अटलांटा, डलास, कनकटी कट, सयाटल,सेंट लूइस, मियामी,बे पाओनट, मैनी सोटा,अरकांसास,हवाई, न्यूयार्क और रोचेस्टर से आने वाले लोगों बड़े लंबे सफ़र और फ़ासला तय करके आए थे।

जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की गाड़ी मस्जिद बैयतुर्रहमान के सेहन में दाख़िल हुई। जमाअत के लोगों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़े वलवला और जोश से स्वागत किया। लोगों ने नारे बुलंद किए। औरतें ज़यारत से फ़ैज़याब हुईं। बच्चियां स्वागत गीत पेश कर रही थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ उनके पास से गुज़रते हुए अपनी रिहायश गाह में तशरीफ़ ले गए।

इस के बाद 5 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

29 अक्तूबर2018 ई (दिनांक सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह में तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोटें मुलाहिज़ा फ़रमाईं और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर की सेवा में अमरीका भर की विभिन्न जमाअतों से आने वाले पत्रों के अतिरिक्त दुनिया की विभिन्न जमाअतों से पत्र और पोर्टस फैक्स और ईमेल द्वारा प्राप्त होते हैं और हुज़ूर अनवर दैनिक काम के साथ साथ इन पत्रों और रिपोर्टों को मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायतों से नवाज़ते हैं।

फ़ैमिली मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ सवा ग्यारह बजे अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज सुबह के इस सैशन में 62 फ़ैमिलीज़ के 294 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया। 76 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 17 October 2019 Issue No. 42

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

प्राप्त किया।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ अमरीका की विभिन्न 18 जमाअतों से आई थीं। विशेष रूप से Kansas city जमाअत से आने वाले 1095 मील का सफ़र 17 घंटे में तय कर के पहुंचे थे।

मुलाक़ात करने वाले सभी लोगों और फ़ैमिलीज़ ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और दया करते हुए छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ात करने वालों के विचार

मुहम्मद गोराय साहिब जिनका सम्बन्ध एक शहीद अहमदी के ख़ानदान से है, हुज़ूर अनवर से अपनी पहली मुलाक़ात का ज़िक्र करते हुए बयान करते हैं कि मैंने नेपाल में 10 साल गुज़ारे हैं और मेरे भाई पाकिस्तान में शहीद हुए थे। मैं 2014 ई में अमरीका आया था और आज का दिन मेरे लिए वास्तविक ईद का दिन था। मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की हार्दिक-ख़्वाहिश थी जो आज पूरी हो गई। अल्हम्दुलिल्ला

एक दोस्त मुहम्मद मुस्तफ़ा साहिब बयान करते हैं कि मैं हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के दौरान अपने भावनाओं पर क़ाबू ना पा सका और जोर ज़ोक से रो पड़ा और हुज़ूर अनवर से ज़्यादा बात ना कर सका। हुज़ूर अनवर का हमारे मध्य मौजूद होना हमारे लिए अपनी इस्लाह का बेहतरीन अवसर है।

ज़ुलक़ुरनैन साहिब जो अपनी फ़ैमिली के साथ हैरिस बर्ग से मुलाक़ात के लिए आए थे, वह बयान करते हैं कि ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे हम ख़ुदा के शेर के सामने खड़े हैं और मेरे पास कहने को कोई शब्द नहीं थे। यह बात भी हमारे लिए ताज्जुब का कारण थी कि हुज़ूर अनवर ने मेरे बच्चों की उम्रों का बिलकुल सही अंदाज़ा लगाया।

अमतुल मतीन साहिबा कहती हैं कि शब्द मेरे भावनाओं को प्रतिबिम्ब नहीं कर सकते। बहुत सुकून महसूस कर रही हूँ। हुज़ूर अनवर मेरे दादा-जान को जानते थे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मेरे दादा के गन्ने के खेत थे। मैं उनके पास जाता था तो वो गन्ने की रो से मेहमान-नवाज़ी किया करते थे जो कि बहुत अच्छी होती थी।

मुलाक़ात करने वाले एक दोस्त बिलाल अहमद काहलों साहिब कहते हैं। मैं नेपाल से अमरीका आया हूँ। नेपाल में मैं ने दस साल पनाह लेने वाले के तौर पर गुज़ारे। आज हुज़ूर अनवर से मेरी ज़िन्दगी की पहली मुलाक़ात थी। शब्द मेरी हालत के प्रतिनिधित्व नहीं हो सकते। यह लम्हे इतने हसीन थे कि अब हमेशा मेरी यादों में ज़िन्दा रहेंगे।

एक दोस्त शाहिद अहमद डार साहिब बयान करते हैं कि मैंने पाकिस्तान से हिजरत के बाद नेपाल में ग्यारह साल का समय गुज़ारा है। हुज़ूर अनवर से मिलने की तड़प और इच्छा तो हर अहमदी मुसलमान के दिल में बस्ती है। अल्लाह का लाख शुक्र है कि आज मेरी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई है।

सफ़ीर अहमद बाजवा साहिब बयान करते हैं आज ज़िन्दगी में पहली बार ख़लीफतुल मसीह का दर्शन नसीब हुआ। जब हम मुलाक़ात के लिए दफ़्तर में दाख़िल हुए तो हुज़ूर अनवर के चेहरा पर नज़र पड़ी तो चेहरा मुबारक को नूर ही नूर पाया। हुज़ूर अनवर ने जब मुझे मुलाक़ात का अवसर प्रदान फ़रमाया तो मैंने इस अवसर को ग़नीमत जानते हुए अपने आक़ा के मुबारक हाथ को तीन बार चूमने का सौभाग्य पाया।

हैरिस बर्ग से आने वाले एक दोस्त ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब बयान करते हैं कि हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात यद्यपि कुछ लम्हे पर आधारित थी लेकिन हमेशा के लिए हमारी ज़िन्दगी के लिए एक यादगार बन गई। मुलाक़ात में हुज़ूर अनवर ने मुझे एक नसीहत भी की। जब मैंने हुज़ूर अनवर को अपनी नौकरी के बारे में बताया तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि दियानतदारी और मेहनत से अपना काम करो।

एक दोस्त मुनव्वर अहमद साहिब ने अपनी फ़ैमिली के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया, बयान करते हैं कि आज अल्लाह तआला ने हमारी मुराद पूरी फ़र्मा दी। हुज़ूर अनवर ने मुझे और मेरी फ़ैमिली को दुआ के लिए स्थायी ख़त लिखने की ताकीद फ़रमाई। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि दुआ के लिए ख़त लिखते रहें यद्यपि आपको जवाब ना भी मिले। इस तरह आपकी ज़िम्मेदारी ख़त्म और मेरी ज़िम्मेदारी शुरू।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम दोपहर सवा दो बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

मुबल्लग़ीन सिलसिला अमरीका की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

आज प्रोग्राम के अनुसार अमरीका के मुबल्लग़ीन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ छः बजे मीटिंग रुम में तशरीफ़ लाए।

इस मीटिंग में 29 मुबल्लग़ीन शामिल हुए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या मुबल्लग़ीन की मीटिंग हर महीने होती है। इस पर मुबल्लिग़ इंचार्ज ने निवेदन किया कि हर मीहने तो नहीं लेकिन दो माह के बाद होती है। इस पर हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि मैंने हर महीने कहा हुआ है। दो माह तो नहीं, हर महीने किया करें। जो मुबल्लग़ीन क़रीब हैं दो तीन सौ मील के अंदर हैं वह आ जाया करें। उनको बुलवा लिया करें और जो दूर हैं वह टैली कान्फ्रैंस के द्वारा मीटिंग में शामिल हूँ इसी तरह हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि क्षेत्र बदल बदल कर मीटिंग क्या करें। इस तरह हर क्षेत्र के मुबल्लिग़ मीटिंग में हाज़िर हो सकेंगे और जो इस क्षेत्र से दूर के क्षेत्र के होंगे वहां के मुबल्लिग़ कान्फ्रैंस काल के द्वारा शामिल हो जाया करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया मीटिंग में मुबल्लग़ीन ने हर महीने जो काम किए हैं वह आपस में share हूँ। सबको पता लगे कि तब्लीग़ के लिए क्या-क्या तरीक़े धारण किए गए हैं और क्या नतीजे निकले हैं। कौन सा तरीक़ा ज़्यादा कामयाब रहा है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया फ़ायदा वहीं हो रहा है जहां हर माह मीटिंग होती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मैंने मुरब्बियान को कहा था कि सुबह तहज्जुद पढ़ने की आदत डालें। रिपोर्टों में लिख देते हैं कि तहज्जुद पढ़ी। अक्सर यह करते हैं कि नमाज़ से पहले उठे और दो नफ़ल पढ़ लिए। यह ख़ानापुरी है, तहज्जुद नहीं है। कम से कम आधा पौना घंटा पहले उठें। सर्दियों में तो और भी ज़्यादा वक़्त मिल जाता है। इस तरफ़ ध्यान होना चाहिए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने बारी बारी सारे मुबल्लग़ीन से उनके सैंटर्ज़ में नमाज़ों की हाज़िरी का जायज़ा लिया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर मस्जिद में नमाज़ों में हाज़िरी नहीं होती तो मस्जिद बनाने का फ़ायदा किया। हुज़ूर अनवर ने सारी मुबल्लग़ीन को हिदायत फ़रमाई कि सबसे पहले जमाअत के ओहदेदारान को लाना शुरू कर दें तो कम से कम अन्सार, ख़ुद्दाम की मज्लिस आमिला शामिल करके पैंतालीस, पच्चास की हाज़िरी तो एक नमाज़ पर होनी चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ओहदेदारों का नमूना स्थापित होगा तो दूसरे लोगों को पैदा होगी।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई जो लोगों मस्जिद के क़रीब रहते हैं उनको मस्जिदों में नमाज़ के लिए आना चाहिए।

एक मुबल्लिग़ से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या आप अपने क्षेत्र की जमाअतों में बता के जाते हैं या बिना बताए? हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कभी बिना बताए भी चले जाया करें। इस तरह सही जायज़ा भी मिल जाएगा। पता चल जाएगा कि नमाज़ों की हाज़िरी क्या होती है।

हुज़ूर अनवर ने एक मुबल्लिग़ को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि आपको अपनी हर जमाअत में साप्ताहिक जाने की कोशिश करनी चाहिए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad